GOA UNIVERSITY

गोंय विद्यापीठ

# गोवा विश्वविद्यालय

## शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य महाशाला

## हिंदी अध्ययन शाखा

एम. ए. प्रथम वर्ष, सत्र II

एच आई एन 527 (हिंदी क्षेत्रों में अध्ययन यात्रा)

नाम :- सुविधा सु गांवकर

अनुक्रमांक:- 23P0140032

विषय : भ्रमण रिपोर्ट

दिनांक :- 03/05/2024

16/20

3/05/24

परीक्षक : स.प्रो. दीपक वरक

स.प्रो.श्वेता गोवेकर

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

## अनुक्रमणिका


| क्रमांक | विषय | पृष्ठ क्रमांक |
|---|---|---|
| 1 | प्रस्तावना | 02 |
| 2 | दोनों की ट्रेन यात्रा | 04 |
| 3 | दिल्ली में पहला दिन | 05 |
| 4 | दिल्ली में दूसरा दिन | 09 |
| 5 | दिल्ली में तीसरा दिन_ | 25 |
| 6 | दिल्ली में चौथा दिन | 37 |
| 7 | दिल्ली में पांचवां दिन | 44 |
| 8 | वापसी | 55 |
| 9 | निष्कर्ष | 56 |

# प्रस्तावना

प्रथम सत्र की परीक्षा के अंतिम पेपर के दिन जब हमें बताया गया कि अगले सत्र में हमें ब्राह्मण साहित्य होगा तब हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। भ्रमण के लिए हम फरवरी में जाने वाले थे लेकिन हमने 4 महीने पहले से ही जाने की तैयारी करनी शुरू कर दी थी। कौन से कपड़े पहनेंगे क्या खाना लेकर जाएंगे, कौन सी गेम्स खेलेंगे, कौन से रिल्स बनाएंगे, कौन किसके साथ रहेगा सब कुछ पहले ही तय हो गया था। भ्रमण स्थान दिल्ली जाना तय हुआ था। दिल्ली के बुक फेर में जाने के लिए मैं बहुत उत्सुक थी। 11 फरवरी को हम ट्रेन से दिल्ली जाने वाले थे तो कुछ दिन पहले हमारे विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक दीपक सर और कुछ विद्यार्थियों ने जाकर टिकट बुकिंग करवाई सभी बहुत उत्सुक थे। तीन दिन पहले 9 फरवरी को पता चला कि आपातकालीन स्थिति के कारण भ्रमण यात्रा अगले महीने होगी। यह सुनते ही सभी के चेहरे मुरझा गए। कितना कुछ सोचा था सब पर पानी फिर गया लेकिन क्या करें मुसीबत बता कर तो नहीं आती। कुछ दिन बाद फिर टिकट बुकिंग करवाई इस बार हम 18 तारीख को जाने वाले थे लेकिन इस बार सब की उत्सुकता थोड़ी कम हो गई थी। लेकिन जैसे-जैसे जाने के दिन नजदीक आने लगे वैसे वैसे सबके मन की वह उत्सुकता वापस आ गई। यह भ्रमण विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक दीपक वरक सर और प्राध्यापक बिपिन तिवारी सर के निर्देशन में होने वाला था लेकिन किसी कारण वंश बिपिन सर नहीं आ पाए तो उनके स्थान पर विश्वविद्यालय की सहायक प्राध्यापिका श्वेता मैडम और पी.एच.डी विद्यार्थी रोताश सर आ गए। 18 मार्च सोमवार को 3:30 की गोवा एक्सप्रेस ट्रेन से हम दिल्ली जाने वाले थे 2 दिन पहले ही सारा सामान बांध लिया था।

(मडगांव रेल्वे स्टेशन)

ट्रेन में तस्वीरें खिंचते हुए हम

# 2 दिन की ट्रेन यात्रा

18 तारीख को ट्रेन छूटने के 1 घंटे पहले ही हम स्टेशन पर पहुंच गए ट्रेन का समय हो गया था लेकिन पता चला की ट्रेन एक घंटा देर से आएगी। सब लोग बेसब्री से ट्रेन का इंतजार कर रहे थे शाम का समय था और मुझे चाय की याद आ रही थी और ट्रेन के आने में भी काफी समय था इसलिए हम पास के होटल में चाय पीने के लिए गए चाय पीकर ताजगी महसूस हुई और हमने स्टेशन पर कुछ तस्वीरें खींची। इंतजार की घड़ी खत्म हो गई और हमें ट्रेन की आने की सूचना मिली ट्रेन की स्टेशन पर पहुंचते ही सभी अपने बैग्स लेकर ऐसे ट्रेन में चढ़ गए जैसे कि यह दिल्ली की मेट्रो हो और 1 मिनट में जाने वाली हो। सभी अपना सामान लेकर ट्रेन के अंदर बीच में खड़े हो गए और जोर-जोर से बात करने लगे । अगल-बगल के लोगों को यह समझने में देरी नहीं हुई कि यह सब एक साथ पहली बार यात्रा कर रहे हैं। जिनको जगह मिली वह अपने दोस्तों के साथ बैठ गए और कुछ लोगों को अपने दोस्तों से अलग बैठना पड़ा। मुझे 48 नंबर की सीट मिली। मेरे नीचे वाले सीट पर दिव्या प्रीतेश सोफिया ज्योति और प्रियंका थी मैं उनके पास जाकर बैठ गई। हमने ट्रेन में बहुत मजे किये। हमने उनो खेला ,अंताक्षरी खेली ट्रुथ डेयर एंड फायर खेल जहां दिव्या को सबके सामने नचवाया। फिर सब ने जो कुछ भी लाया था वह मिल बाट कर खाया। खाना खाकर थकान के कारण मैं घोड़े बेचकर सो गई लेकिन ट्रेन में एक ऐसी घटना हुई जिससे मेरी नींद चैन सब उड़ गए। मेरा पर्स चोरी होते-होते बच गया एक आदमी मेरा पर्स चुराकर जा रहा था और प्रीतेश ने उसे देख लिया और मेरा पर चोरी होती होते बचा लिया। चोर वापस ना आ जाए इस डर से मैं पूरी रात सो नहीं पाई। अगला दिन भी ट्रेन में इसी तरह की मौज मस्ती में बीत गया 2 दिन की ट्रेन यात्रा के बाद हम 20 तारीख को दिल्ली पहुंच गए।

# दिल्ली में पहला दिन (20/03/2024)

6:30 बजे हम दिल्ली स्टेशन पहुंच गए। मैंने सोचा था कि इतनी सुबह दिल्ली में कोई नहीं होगा न ही कोई बस होगी और न ही कोई रिक्षा लेकिन इतनी सुबह इतनी भीड़ थी जितनी हमारे गोवा में जत्रा के दिन लगती है। हम रेल्वे स्टेशन से चलकर मेट्रो स्टेशन गए। मेट्रो की टिकट निकाली और मेट्रो से आजमेरी मेट्रो स्टेशन पर उतर गए। मैंने पहली बार मेट्रो में प्रवास किया था। मेट्रो में पहली बार जाने का अनुभव बहुत रोचक था। मेट्रो में सफर करके मुझे शहर की तेज़ रफ़्तार और भीड़-भाड़ का अनुभव हुआ है। मेट्रो के अंदर सुविधाजनक सीटें, एयर कंडीशनिंग, और साफ़ माहौल था। और सबसे अच्छा हिस्सा था कि हम ट्रैफ़िक से बचके अपने मंज़िल तक जल्दी पहुंच गए। आजमेरी गेट के मेट्रो स्टेशन पर हम रुक गए और सर होटल ढूंढने गए। हमें एक घंटा वहां रुकना पड़ा थकान और भूख के कारण सभी की हालत देखने लायक नहीं थी। कुछ लोग वहां नीचे बैठ गए लेकिन सिक्योरिटी गार्ड ने आकर हमें उठाया और कहा कि 'यह रेलवे स्टेशन नहीं है'। सब लोग हमें देख रहे थे वहां ज्यादा समय रुकने की अनुमति नहीं थी इसलिए हम एग्जिट गेट की तरफ जाकर रुक गए। वहां के लोग हमें ऐसे घूर रहे थे जैसे कि हम कोई सेलिब्रिटी हो। 15 मिनट में सर आ गए और हम टुक-टुक में बैठकर पहाड़गंज के इंटरनेशनल होटल पहुंच गए। वह रिक्शा हमारे गोवा की रिक्शा की तरह नहीं थी। उनके रास्ते देखकर मुझे लगा कि हमारे गोवा के रास्ते इन रास्तों से हजार गुना बेहतर है। हम 12:00 बजे इंटरनेशनल होटल पहुंच गए। मैं सोफिया और दिव्या रूम नंबर 230 में रुके। नहा धोकर कुछ देर बैठ गए और 2:30 हम नजदीकी होटल में भोजन करने के लिए गए।

## भ्रमण स्थान

- **अक्षरधाम मंदिर**

भोजन करने के बाद हम मेट्रो से गणेश नगर के पास अक्षरधाम मंदिर देखने के लिए निकल गए। मंदिर में समान और फोन ले जाने की अनुमति नहीं थी इसलिए हमने अपना सामान और फोन बाहर रखकर मंदिर में प्रवेश किया। मंदिर देख कर सबके मुंह से केवल एक ही शब्द निकला वह क्या मंदिर है। जब मैंने अक्षरधाम मंदिर की यात्रा की तो मैं वाकई हैरान रह गयी। मंदिर के बाहरी भव्य ढांचे से ही इसकी गणना हो जाती है। मैंने देखा कि कैसे इसकी वास्तुकला में स्थानीय और पौराणिक कथाओं का अद्भुत संगम है। मंदिर के अंदर जब प्रवेश किया, तो मुझे उस शांतिपूर्ण और धार्मिक वातावरण की अनुभूति हुई। मैंने देखा कि कैसे मंदिर के भीतर की दीर्घवासी में भगवान स्वामीनारायण की मूर्तियाँ और उनके जीवन के किसी अहम पल को दर्शाया हैं। मंदिर के अंदर एक अद्वितीय प्रदर्शनी हॉल, जिसमें प्राकृतिक और ऐतिहासिक घटनाओं की ज़िन्दगी-साधना देखने मिली। वहां पर मैंने भारतीय धर्म, संस्कृति और इतिहास के बारे में बहुत कुछ सीखा । मंदिर के अंदर एक अद्वितीय संग्रहालय भी है, जहां पर भारतीय कला, शिल्पकला, और विरासत के अद्भुत कार्यों को देख सकते हैं। यहां पर हमने एक शांत और पवित्र वातावरण महसूस किया। लगभग तीन घंटे हम मंदिर में घूमते रहे और सब कुछ देखा । मंदिर के पास ही एक फूड कोर्ट है जहां बहुत सारी चटपटी चीज और अन्य खाना पीना मिलता है हमने वहां पानी पुरी खाई और 8:00 बजे हम वहां से वापस होटल चले गए। होटल जाकर नहा धोकर हमने खाना खाया और सब साथ बैठकर गप्पे लड़ाने लगे बात करते-करते कब आंख लग गई पता ही न चला।

## अक्षरधाम मंदिर का इतिहास

अक्षरधाम कॉम्प्लेक्स का मुख्य आकर्षण अक्षरधाम मंदिर है। यह मंदिर 86342 वर्ग फुट परिसर में फैला हुआ है। यह 141 फूट ऊँचा, 316 फूट चौड़ा और 356 फूट लंबा है। मंदिर में 2870 सीढ़ियां और एक कुण्ड है जिसमें भारत के महान गणितज्ञों की महानता को दर्शाया गया है। मंदिर का निर्माण श्री अक्षरधाम पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था के प्रमुख महाराज के नेतृत्व में किया गया है। मंदिर के निर्माण में गुलाबी पत्थरों, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों का उपयोग किया गया है। इसका निर्माण हिन्दू शिल्प शास्त्र के अनुसार ही किया गया है और मुख्य मंदिर में स्टील का उपयोग नहीं किया गया है।

तक़रीबन 11000 कलाकारों और अनगिनत सहयोगियों ने मिलकर इस विशाल मंदिर का निर्माण किया था, नवम्बर 2005 में इस मंदिर की स्थापना की गयी थी। मंदिर को पांच प्रमुख भागों में विभाजित किया गया है। इस मंदिर में 234 नक्काशीदार पिल्लर, 9 अलंकृत गुम्बद, 20 शिखर और 20000 साधुओं, अनुयायियों और आचार्यो की मूर्तियाँ हैं।

स्वामीनारायण मंदिर जातिगत गुरुओं के विचारो की प्रतिमाओ से घिरा हुआ है। स्वामीनारायण में बनी हर एक मूर्ति हिन्दू परंपरा के अनुसार पञ्च धातु से बनी हुई है। इस मंदिर में सीता-राम, राधा-कृष्णा, शिव-पार्वती और लक्ष्मी-नारायण की मूर्तियाँ भी है।

गिनीज बुक और वर्ल्ड रिकॉर्ड में अक्षरधाम मंदिर का नाम शामिल है। अक्षरधाम मंदिर को विश्व का सबसे विशाल हिन्दू मंदिर माना जाता है।

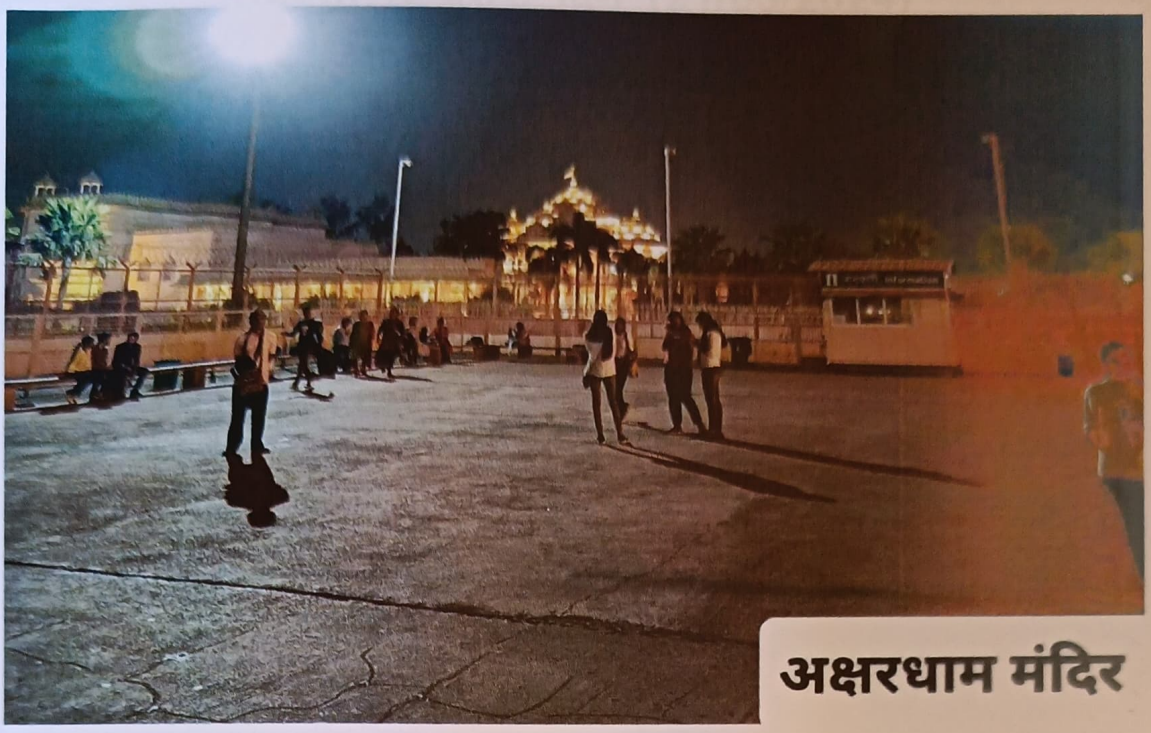

अक्षरधाम मंदिर

अक्षरधाम मंदिर के प्रवेश द्वार प

# दिल्ली में दूसरा दिन (21/03/2024)

- भ्रमण स्थान

1. इंडिया गेट
2. ललित कला अकादमी
3. कमल मंदिर
4. हुमायूं मकबरा
5. **लक्ष्मी नारायण बिरला मंदिर**

दूसरे दिन तैयार होकर हम जहा ठहरे थे उसी होटल में नाश्ता किया और 9:00 बजे होटल की बस से सबसे पहले इंडिया गेट देखने के लिए रवाना हुए।

## 1. इंडिया गेट

इंडिया गेट देखने का अनुभव बहुत ही कमाल था। जब मैं वहां पहुंचीं, तो मुझे उसकी शान और महंत का एहसास हुआ। इंडिया गेट की वास्तुकला और भव्यता देख कर मुझे अपने देश पर गर्व हुआ ।यह एक स्मारक है जो भारत की आजादी और वीर जवानों की याद को समर्पित है। ये एक विशाल मोहर है, जिसके ऊपर "अमर जवान ज्योति" स्तंभ है, जहां पर हमेशा एक ज्योति जलती है। ये ज्योति वीर जवानों की याद को और उनकी कुर्बानी को समर्पित है। वहां घूमते हुए, मैंने अपने देश के वीर जवानों के नाम पर लिखे नाम को और उनकी कुर्बानी को याद किया। ये जगह एक ऐसी जगह है जहां पर लोगों का प्यार और सम्मान देश के लिए दिखता है। इंडिया गेट के पास हमनें बहुत सारी तस्वीरें लीं और वहां स्थित 'स्मारिका' उपहार की दुकान

देखी जिसे shrin of rememberance नाम से जाना जाता हैं। यहां की सभी वस्तुओं पर भारत के तिरंगे या भारतीय सेना का अभिकल्प था।

## इंडिया गेट का इतिहास

इंडिया गेट उन लोगों की याद में बना है, जिन्होंने देश के लिए अपने जीवन को समर्पित कर दिया था। यह स्मारक नई दिल्ली में राजपथ मार्ग पर स्थित है, जो भारत की विरासत के रूप में जाना जाता है। प्रथम विश्व युद्ध और तीसरे एंग्लो-अफगान युद्ध में ब्रिटिस इण्डियन आर्मी के लगभग 90,000 सैनिकों ने शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को बचाने में अपनी जान गँवा दी थी। इन्ही सैनिकों के सम्मान के लिए इंडिया गेट का निर्माण किया गया था। इंडिया गेट की दीवारों पर इन सैनिकों के लिखे हुए नामों को भी देखा जा सकता है। इंडिया गेट एड्विन लैंडसियर लूट्यन्स द्वारा डिजाइन किया गया था और इसका निर्माण 1931 में पूरा हुआ था। शुरूआत में इस स्मारक का नाम 'ऑल इंडिया वॉर मेमोरियल' रखा गया था। यह स्मारक पेरिस के आर्क डी ट्रौम्फ से अवतरित है। इसका निर्माण लाल बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट से किया गया है। इंडिया गेट की ऊँचाई 42 मीटर है।

इस विशाल मोहर है के ऊपर "अमर जवान ज्योति" स्तंभ है। अमर जवान ज्योति (अमर योद्धाओं की लौ) 1971 में पाकिस्तान के साथ युद्ध में अपनी जान गँवाने वाले भारतीय सैनिकों के सम्मान के लिए बहुत बाद में बनवाई गई थी। अमर जवान ज्योति काले संगमरमर से बनी है और इसके ऊपर एक बंदूक और एक सैनिक की टोपी रखी हुई है। हालांकि ऐतिहासिक महत्व अभी भी स्मारक से जुड़ा हुआ है लेकिन इसके आसपास के लॉन, फव्वारे और राष्ट्रपति भवन के दृश्य के कारण इंडिया गेट कई दिल्ली वासियों के लिए एक पिकनिक स्थल बन गया है इंडिया गेट दिल्ली की शान है और यहां आने का अनुभव हमेशा याद रहेगा। इंडिया गेट से हम 12:15 बजे हम हमारा दूसरा स्थान ललित कला अकादमी देखने के लिए निकल गए।

## 2. ललित कला अकादमी

ललित कला अकादमी पहुंच कर हमने वहां कुछ तस्वीरें ली। ललित कला अकादमी कई भागों में विभाजित है जैसे कि साहित्य अकादमी, नाट्य अकादमी, संगीत अकादमी आदि। सर्वप्रथम हमने साहित्य अकादमी का पुस्तकालय देखा वहां साहित्य और कला से जुड़ी कई सारी पुस्तकें थी। वहां एक वाचन कक्ष था जहां बैठकर लोग किताबें पढ़ रहे थे। साहित्य अकादमी से मैंने कुछ काव्य संग्रह खरीदे। फिर वहीं पर हमने नाट्य अकादमी देखी। नाट्य अकादमी में भारत के लोकनाट्य और नृत्य में इस्तेमाल किये जाने वाले अनेक मुखौटे थे, जैसे कि सही जात्रा मुखौटा, छऊ नृत्य मुखौटा, रामलीला मुखौटा, और कृष्णट्टम मुखौटा। ये मुखौटे अभिनय के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। हर मुखौटा अपने-अपने लोकनाट्य परंपरा और कथा को दर्शाता है। साही जात्रा मुखौटा ओडिशा के लोकनाट्य में प्रयोग होता है, छऊ नृत्य मुखौटा झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के लोकनाट्य में प्रयोग होता है, रामलीला मुखौटा रामायण के किस्से को प्रस्तुत करता है और कृष्णट्टम मुखौटा केरल के नाट्य परंपरा में प्रयोग होता है।

नाट्य कला अकादमी के बाजू में ही संगीत कला अकादमी थी जहां पर प्राचीन से लेकर आधुनिक संगीत के अनेक वाद्ययंत्र रखे थे। यहां पर सितार, तबला, वीणा, हारमोनियम, ढोलक, बांसुरी और अनेक वाद्ययंत्र मौजुद थे। ये भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले अलग-अलग संगीत परंपरा और अनेक जातियों के संगीत से जुड़े हुए हैं। वाद्यस्त्रो के माध्यम से संगीत के आनंद का अनुभव होता है और संगीत के साथ एक अनोखा संबंध बनता है। प्राचीन और आधुनिक वाद्यस्त्रो के संग्रह ने मुझे संगीत की समृद्धि और विरासत का अनुभव कराया।

## ललित कला अकादमी का इतिहास

ललित कला अकादेमी (राष्ट्रीय कला संस्थान) की स्थापना भारत सरकार द्वारा 5 अगस्त 1954 को की गई और इसका पंजीकरण समिति पंजीकरण अधिनियम 1860 के तहत 11 मार्च 1957 को किया गया। संविधान में स्थापित उद्देश्यों के अनुसरण में संस्था सामान्य परिषद्, कार्यकारिणी समिति और अन्य समितियों के माध्यम से कार्य करती है। भारत में दृश्य कलाओं के क्षेत्र में ललित कला अकादेमी शीर्ष सांस्कृतिक संस्था है। यह एक स्वायत्तशासी संस्था है जो पूर्णतया संस्कृति मंत्रालय द्वारा वित्तपोषित है। ललित कला अकादेमी एक ऐसा संस्थान है जिसने राष्ट्र में कलाओं के प्रति अपनी सेवाएँ तब से प्रदान करनी शुरू कर दी थीं जब विश्व ने भारतीय कला के सार्वभौमिक प्रभाव को महसूस करना आरम्भ ही किया था। अपने कर्मचारियों और सदस्यों के नेतृत्व के द्वारा अकादमी मानक कलाकृतियों के स्थायी संग्रह का प्रलेखन एवं संरक्षण करके कला सेवा के प्रति प्रतिबद्ध है। अकादेमी का स्थायी संग्रह भारतीय समकालीन और आधुनिक कला की रहस्योद्घाटक प्रवृत्तियों, जटिलताओं और सजीवता को प्रतिबिम्बित करता है। अकादेमी के तहत एक पुस्तकालय, कला अभिलेखागार, कला संरक्षण प्रयोगशाला है और देश के प्रख्यात बुद्धिजीवी कलाकारों के प्रकाशनों तथा विद्वानों को प्रोत्साहित करते हुए अकादेमी पूरे वर्ष अद्वितीय महत्व के शैक्षणिक कार्यक्रम और प्रदर्शनियाँ प्रस्तुत करती है।

ललित कला के मिशन का केन्द्र विभिन्न स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों को आधुनिक और समकालीन कला का आनन्द प्रदान करना तथा उसके प्रति गहरी समझ को प्रोत्साहित करना है।

ललित कला अकादमी देखने के बाद हमने रास्ते के स्टॉल्स पर भोजन किया और दिल्ली का प्रसिद्ध कमल मंदिर देखने के लिए रवाना हुए।

### 3. कमल मंदिर

कमल मंदिर देखने का अनुभव सच में कुछ अलग था। जब हम वहां पहुंचे, तो उसकी सुंदरता ने हमें आकर्षित कर लिया। फूल के आकार वाला मंदिर मैंने इससे पहले कभी नहीं देखा था। उसके बगीचे में घूमते हुए, हमें एक अलग शांति का एहसास हुआ। हमने हमारे जुते बाहर निकाले और सब एक पंक्ति से मंदिर में गए और वहां मौजूद वॉलिंटियर से मंदिर के बारे में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने बताया कि यह मंदिर शांति का प्रतीक है और यहां फोन का उपयोग करना या बात करना मन है। हम अंदर गए और देखा कि अंदर एक बड़ा सभागृह और बैठने की अवस्था की गई है। हम वहां कुछ देर शांति से बैठ गए। वहां का माहौल बहुत शांत था और इस शांत वातावरण में मेरे मन को बहुत सुकून मिल रहा था। । कुछ देर बैठ कर, हम वहां से चले गए और बाहर जाकर कुछ तसवीरें ली।

### कमल मंदिर का इतिहास

कमल मंदिर को लोटस टेंपल कहा जाता है। बहाई धर्म की आस्था से जुड़ा राजधानी दिल्ली के नेहरू प्लेस के पास स्थित लोटस टेंपल का निर्माण बहाई धर्म के संस्थापक बहाउल्लाह ने करवाया था। कमल के फूल के आकार की तरह बने इस लोटस टेंपल का निर्माण काम नवंबर, 1986 में पूरा हुआ था, जिसका उद्घाटन 24 दिसंबर, 1986 को किया गया था, जबकि आम पब्लिक के लिए इस मंदिर को नए साल पर 1 जनवरी 1987 को खोला गया है। लोटस टेंपल के निर्माण में करीब 10 साल का लंबा समय लग गया था। लोटस टेंपल बहाई धर्म के दुनिया में स्थित 7 प्रमुख मंदिरों में से एक है।

इसके अलावा बहाई धर्म के अन्य मंदिर कम्पाला, सिडनी, इल्लिनॉइस, फ्रैंकपर्ट, विलमेट, पनामा, अपिया में हैं। लोटस टेंपल अपने अद्धितीय वास्तुशिल्प और अनूठी डिजाइन के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। इस मंदिर को कनाडा में रहने वाले एक मशहूर पर्शियन वास्तुकार फरीबर्ज सहबा

ने तैयार किया था। यह मंदिर भारत की सर्वधर्म समभाव की अनूठी संस्कृति को दर्शाता है, यह हर धर्म से जुड़े लोगों के लिए खुला हुआ है। यह भारत की आधुनिक वास्तुकला का एक नायाब नमूना है। कमल मंदिर में बने इसके भव्य प्रार्थना सभागार में एक बार में करीब ढाई हजार लोग आ सकते हैं। अपनी अद्भुत वास्तुशिल्प के लिए मशहूर इस लोटस टेंपल को देखने रोजाना करीब 10 हजार लोग आते हैं। लोटस टेंपल एशिया महाद्धीप का इकलौता ऐसा मंदिर है जहां मूर्ति पूजा नहीं होती है, यह मंदिर प्रभु की उपस्थिति में विश्वास रखता है एवं यह सभी धर्मों के लिए खुला हुआ है। यह मंदिर "अनेकता में एकता' के सिद्धांत को यथार्थ रुप देता है एवं सभी धर्मो का आदर करता है। कमल मंदिर से हम 4:15 बजे अगले स्थान हुमायूँ का मकबरा देखने के लिए रवाना हुए।

## 4. हुमायू मकबरा

5:15 के आसपास हम हुमायूं मकबरा पहुंच गए। शाम को सूर्यास्त के समय हुमायूँ का मकबरा देखने का अनुभव सच में बहुत ही खूबसूरत था! जब हम वहां पहुंचे, तो आसमान के रंगीन दस्तखत और शाम की रोशनी ने उसे और भी ज्यादा खूबसूरत बना दिया था। हुमायूं मकबरे के मकबरे की भव्यता और स्थापत्य सुंदरता देखकर मुझे उसका पूरा इतिहास जानने की दिलचस्पी हुई। प्रवेश द्वारा के दोनों तरफ छोटे कक्ष थे जिसमें हुमायूं मकबरे का इतिहास लिखा था। इस मकबरे के आसपास का बैग बहुत सुंदर है प्रवेश द्वार और मकबरे के बीच एक फवारा शामिल है जो इस जगह की खूबसूरती को बढ़ाता है।

यह मकबरा एक ऊंचे चबूतरे पर बना है उपर जाने के लिये दक्षिणी ओर से सीढ़ियां बनी हैं। हम सीढ़ीयों से उपर गए और उपर का खूबसूरत नजारा देखा। मकबरे को घेरे हुए चारबाग हैं, व उन्हें घेरे हुए तीन ओर ऊंची पत्थर की चहारदीवारी है और तीसरी ओर कभी निकट ही यमुना

नदी बहा करती थी, जो समय के साथ परिसर से दूर चली गई है। इसके अंदर मुख्य केन्द्रीय कक्ष सहित नौ वर्गाकार कक्ष बने हैं। इनमें बीच में बने मुख्य कक्ष को घेरे हुए शेष आठ दुमंजिले कक्ष बीच में खुलते हैं। मुख्य कक्ष गुम्बददार (हुज़रा) एवं दुगुनी ऊंचाई का एक-मंजिला है और इसमें गुम्बद के नीचे एकदम मध्य में आठ किनारे वाले एक जालीदार घेरे में द्वितीय मुगल सम्राट हुमायुं की कब्र बनी है। सम्राट की असली समाधि ठीक नीचे आंतरिक कक्ष में बनी है, जिसका रास्ता बाहर से जाता है। इसके ठीक ऊपर दिखावटी किन्तु सुन्दर प्रतिकृति बनायी हुई है। नीचे आम पर्यटकों को जाने की अनुमति नहीं है।

## हुमायूं मकबरे का इतिहास

हुमायूँ का मकबरा (मक़बरा ए हुमायूँ) दिल्ली, भारत में मुग़ल सम्राट हुमायूँ का मक़बरा है। इस कब्र को हुमायूँ की पहली पत्नी और मुख्य संरक्षक, एम्प्रेस बेगा बेगम (जिसे हाजी बेगम के नाम से भी जाना जाता है) द्वारा 1569-70 में बनाया गया था, और मिर्क मिर्ज़ा गियास और उनके बेटे, सय्यद मुहम्मद, द्वारा चुने गए फ़ारसी आर्किटेक्ट्स द्वारा डिज़ाइन किया गया था। यह भारतीय उपमहाद्वीप का पहला उद्यान-मकबरा था, और निज़ामुद्दीन पूर्व, दिल्ली, भारत में स्थित है, जो दीना-पनाह गढ़ के करीब है, जिसे पुराण किला (पुराना किला) भी कहा जाता है, जिसे हुमायूँ ने 1533 में स्थापित किया था। यह भी था इस तरह के पैमाने पर लाल बलुआ पत्थर का उपयोग करने वाली पहली संरचना।

1993 में मकबरे को यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था, और तब से व्यापक बहाली का काम चल रहा है, जो पूरा हो गया है। हुमायूँ के मुख्य मकबरे के अलावा, कई छोटे स्मारकों के ऊपर से जाने वाला मार्ग पश्चिम में, मुख्य प्रवेश द्वार से, जिसमें एक मुख्य द्वार भी शामिल है, जिसमें बीस वर्ष तक मुख्य मकबरे हैं; यह ईसा खान नियाज़ी का

मकबरा परिसर है, जो सूरी वंश के शेरशाह सूरी के दरबार में एक अफगान कुलीन था, जिसने 1547 ईस्वी में निर्मित मुगलों के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। ये मकबरा, मुगल वास्तुकला का पहला शानदार उदाहरण है और इसने बाद में ताज महल के निर्माण में भी प्रभाव डाला। इस्की बनावट में फ़ारसी, इस्लामी और मुग़ल तत्व शामिल हैं। ये जगह मुगल साम्राज्य की शान और गरिमा का प्रतीक है।

हुमायूं मकबरा देखने के बाद 6:30 बजे हम होटल वापस जाने के लिए निकले और रास्ते में लक्ष्मी नारायण बिरला मंदिर में भगवान के दर्शन लिए।

## 5. लक्ष्मी नारायण बिरला मंदिर

इस मंदिर के मुख्य बरामदे में देवी लक्ष्मी और भगवान विष्णु की आकर्षक मूर्तियाँ हैं। मंदिर में आरती के समय एक बड़ा हॉल होता है जिसमें बड़ी संख्या में लोग बैठ सकते हैं। इसके अलावा, विशाल स्थान में एक मंत्रमुग्ध कर देने वाली मूर्तिकला है। मुख्य मंदिर के पास, कई छोटे मंदिर हैं। भगवान कृष्ण और भगवान शिव, भगवान गणेश देवी दुर्गा का प्रसिद्ध मंदिर हैं।

### लक्ष्मी नारायण बिरला मंदिर का इतिहास

यह मंदिर मूल रूप में १६२२ में वीर सिंह देव ने बनवाया था, उसके बाद पृथ्वी सिंह ने १७९३ में इसका जीर्णोद्धार कराया। सन १९३८ में भारत के बड़े औद्योगिक परिवार, बिड़ला समूह ने इसका विस्तार और पुनरुद्धार कराया। मंदिर के मुख्य बरामदे में लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्ति स्थापित है। साथ ही मंदिर परिसर में भगवान शिव, गौतम बुद्ध और भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर भी स्थित हैं। इसके वास्तुशिल्प की बात की जाए तो यह मंदिर उड़ियन शैली में निर्मित

है। मंदिर का बाहरी हिस्सा सफेद संगमरमर और लाल बलुआपत्थिर से बना है जो मुगल शैली की याद दिलाता है। मंदिर में तीन ओर दो मंजिला बरामदे हैं और पिछले भाग में बगीचे और फव्वारे हैं।

दर्शन लेकर हम होटल में वापस लौट गए। 9:00 के आसपास होटल पहुंच गए। अगले दिन सुबह जल्दी उठना था इसलिए नहा धोकर जो कुछ बाहर से लेकर आए थे वह खाकर हम सो गए।

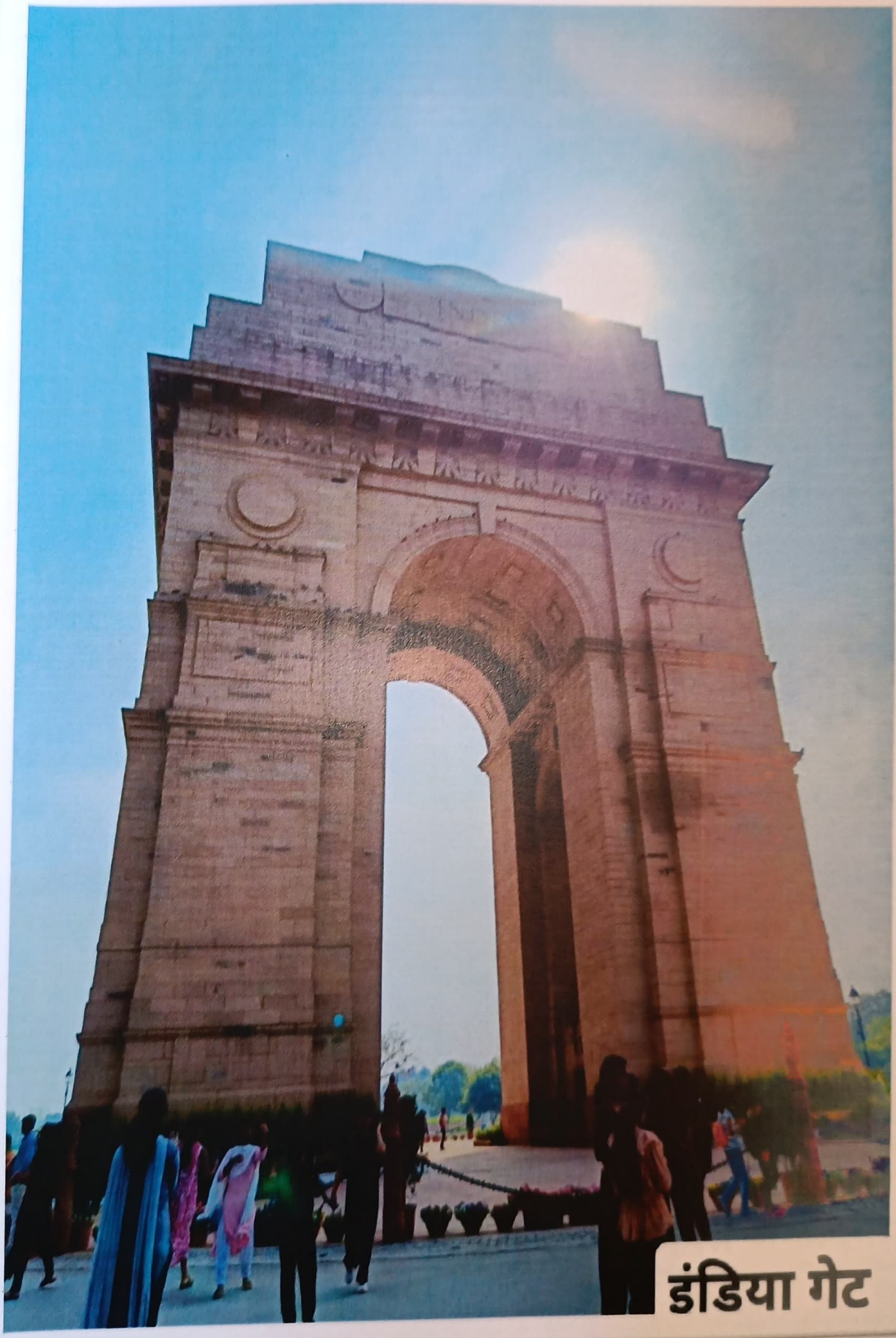

इंडिया गेट

ललित कला अकादमी

संगीत अकादमी

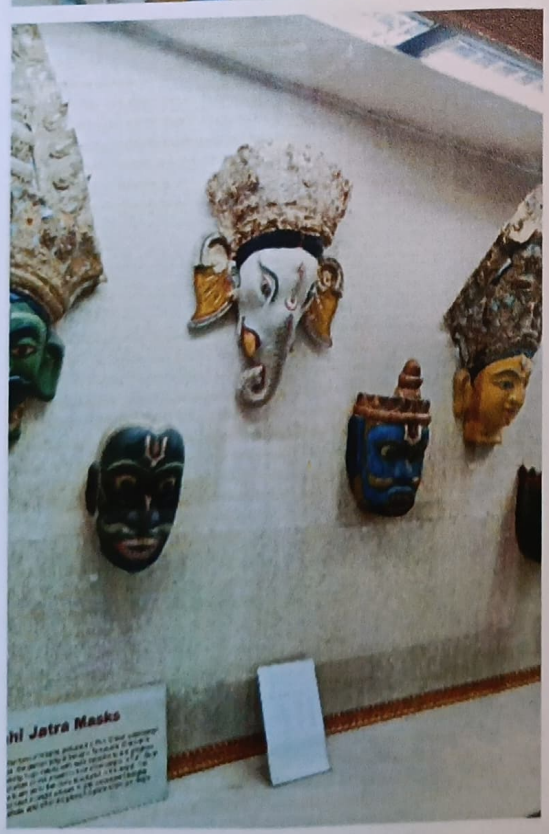

नाट्य अकादमी

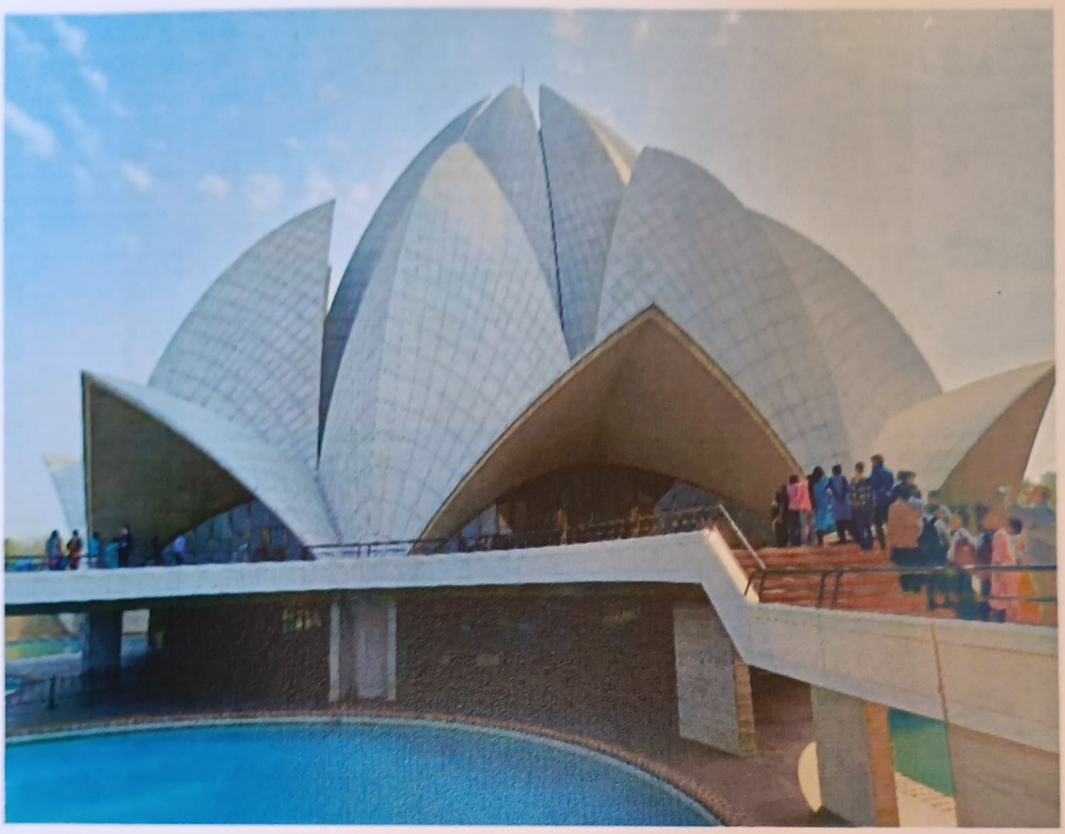

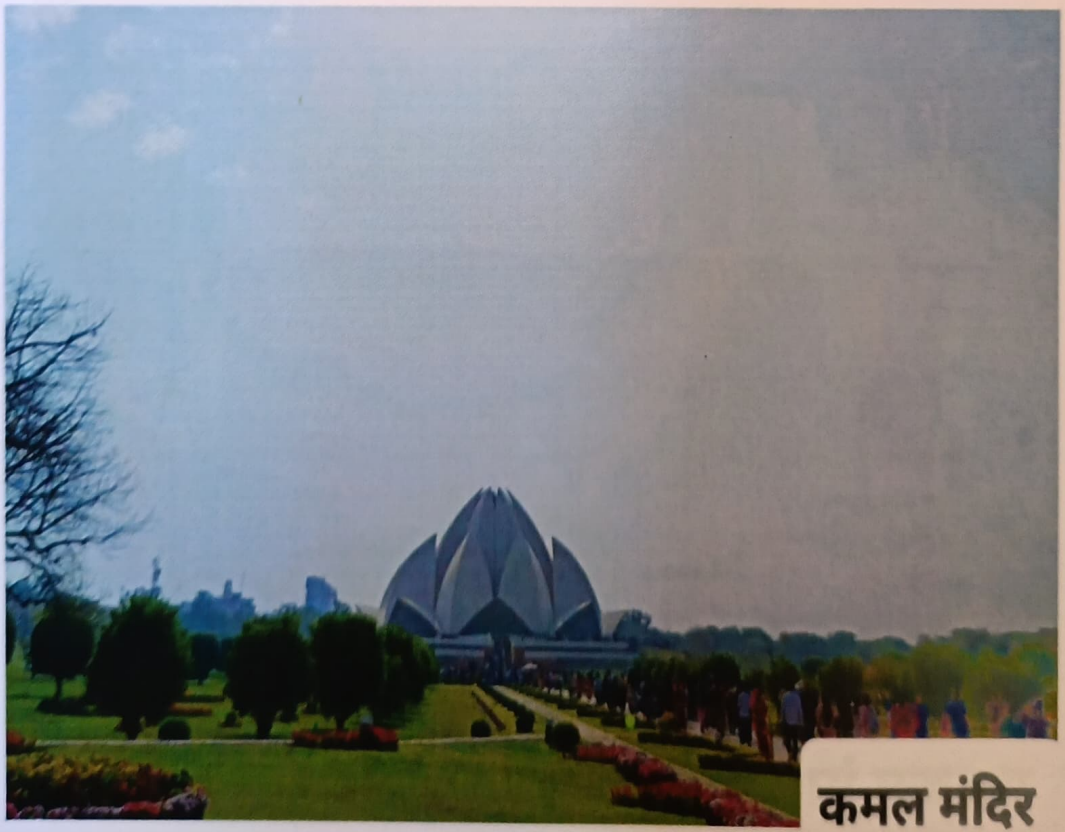

कमल मंदिर

हुमायूं मकबरा

लक्ष्मी नारायण बिरला मंदिर

# दिल्ली में तीसरा दिन (22/03/2024)

- भ्रमण स्थान

1. दिल्ली विश्वविद्यालय
2. हिंदू महाविद्यालय
3. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
4. कुतुबमीनार

सुबह 8:45 बजे हमने रास्ते पर' स्वागत' नाम के होटल में नाश्ता करने के लिए गए होटल वालों ने नाश्ता लाने के लिए देर कर दी इसलिए होटल में काफ़ी देर रुकना पड़ा। नाश्ता करके 10:10 बजे हम दिल्ली विश्वविद्यालय जाने के लिए निकल गए। जाते समय रास्ते में देखा की एक छोटी बच्ची अपनी संतुलन कौशल का प्रदर्शन कर रही थी। उसके सिर पर पानी की बोतल थी दोनों हाथों में बड़ा डंडा था और वह रस्सी पर चल रही थी। उसकी यह प्रतिभा देखकर मैं चकित रह गई लेकिन इतनी कम उम्र में उसे इतना परिश्रम करते देख बुरा भी लग रहा था। गरीबी इंसान से क्या कुछ नहीं करवाती यहां तक की गरीबी कुछ बच्चों का बचपन तक छीन लेती है। उसे बच्ची के बारे में सोचते सोचते कब दिल्ली विश्वविद्यालय पहुंच गई पता ही न चला।

## 1. दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय जाकर पता चला कि उस दिन होली की छुट्टी होने के कारण विश्वविद्यालय बंद था । सर ने किसी तरह उनसे अनुरोध करके हमें विश्वविद्यालय के काला संकाय का हिंदी विभाग दिखाने की अनुमति ली और हम अंदर चले गए। छुट्टी होने के कारण विश्वविद्यालय में कोई नहीं था इसलिए हमें शांतिपूर्वक विश्वविद्यालय देखने का मौका मिला।

दिल्ली विश्वविद्यालय की इमारतों का ढांचा भी बहुत दिलचस्प है। यूनिवर्सिटी की इमारतों का आर्किटेक्चर औपनिवेशिक शैली में है, जिसे एक विंटेज और क्लासिक लुक मिलता है। उनकी ऊंची छतें और विस्तृत डिजाइन बहुत आकर्षक हैं। विश्वविद्यालय के बीचो-बीच एक छोटा सा बाग है। दिल्ली विश्वविद्यालय देखने के बाद हमने वही नजदीक ही स्थित हिंदू महाविद्यालय देखा।

## 2. हिंदू महाविद्यालय

हिंदू महाविद्यालय के प्राध्यापक ने हमें पूरा महाविद्यालय दिखाया। महाविद्यालय के प्रवेश द्वार पर एक खूबसूरत मुगल शैली का मेहराब है, जिसे देखकर दिल खुश हो जाता है। बिल्डिंग के अंदर भी, कक्षाओं और गलियारों का डिज़ाइन बहुत विशाल और सुव्यवस्थित है। महाविद्यालय परिसर में भी बहुत हरियाली और बगीचे हैं, जिससे एक शांतिपूर्ण वातावरण बनता है। हिंदू महाविद्यालय की पूर्व छात्रों की गैलरी भी बहुत प्रभावशाली है। इसमे महाविद्यालय के पुराने छात्रों की तस्वीरें और उपलब्धियाँ प्रदर्शित की गई हैं। यहां पर बहुत सारी जानी-मानी हस्तियां और सफल पेशेवर जिन्होंने अपने संबंधित क्षेत्रों में नाम कमाया है उनकी प्रेरक कहानियाँ और योगदान के बारे में भी जानकारी है। ये गैलरी हिंदू महाविद्यालय के पूर्व छात्रों की सफलता का जश्न मनाने और छात्रों को प्रेरित करने का एक शानदार तरीका है। वहां एक प्राध्यापक ने हमें हिंदू महाविद्यालय की स्थापना का इतिहास बताया ।

### हिंदू महाविद्यालय का इतिहास

हिंदू महाविद्यालय की स्थापना १८९९ में कृष्ण दासजी गुरवाले ने ब्रिटिश राज के खिलाफ राष्ट्रवादी संघर्ष की पृष्ठभूमि में की थी। राय बहादुर अंबा प्रसाद, गुरवाले जी सहित कुछ प्रमुख नागरिकों ने एक महाविद्यालय शुरू करने का फैसला किया, जो गैर-अभिजात्य और गैर-

सांप्रदायिक होते हुए भी युवाओं को राष्ट्रवादी शिक्षा प्रदान करेगा। मूल रूप से, महाविद्यालय लेज चांदनी चौक के किन्नरी बाजार में एक साधारण इमारत में स्थित था, और यह पंजाब विश्वविद्यालय से संबद्ध था क्योंकि उस समय दिल्ली में कोई विश्वविद्यालय नहीं था। जैसे-जैसे महाविद्यालय का विकास हुआ, इसे 1902 में एक बड़े संकट का सामना करना पड़ा। पंजाब विश्वविद्यालय ने महाविद्यालय को चेतावनी दी कि अगर महाविद्यालय को अपना उचित भवन नहीं मिला तो विश्वविद्यालय महाविद्यालय को असंबद्ध कर देगा। इस संकट से महाविद्यालय को बचाने के लिए राय बहादुर लाला सुल्तान सिंह आए। उन्होंने अपनी ऐतिहासिक संपत्ति का एक हिस्सा, जो मूल रूप से कर्नल जेम्स स्किनर का था, कश्मीरी गेट, दिल्ली में महाविद्यालय को दान कर दिया। महाविद्यालय वहाँ से १९५३ तक चलता रहा। जब 1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय का जन्म हुआ, तो रामजस महाविद्यालय और सेंट स्टीफंस महाविद्यालय के साथ हिंदू महाविद्यालय को बाद में दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया, जिससे वे विश्वविद्यालय से संबद्ध होने वाले पहले तीन संस्थान बन गए।

हिंदू महाविद्यालय भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विशेष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बौद्धिक और राजनीतिक बहस का केंद्र था। यह दिल्ली का एकमात्र क महाविद्यालय है जिसमें 1935 से छात्र संसद है, जिसने महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, मुहम्मद अली जिन्ना और सुभाष चंद्र बोस सहित कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान किया। युवा। 1942 में गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन के जवाब में, महाविद्यालय ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इस महाविद्यालय के कुछ शिक्षकों और छात्रों ने गिरफ्तारी दी। महाविद्यालय ने भी कई महीनों के लिए अपने गेट बंद कर रखे थे।

हिंदू महाविद्यालय के बाद हम जामिया मिलिया इस्लामिया विद्यालय देखने के लिए गए। सर अंदर आने की अनुमति लेने के लिए अंदर गए थे और हम बहार इंतजार कर रहे थे लगभग आधा घंटा हमने बहार इंतजार किया लेकिन कुछ कारण वंश हमें वहां प्रवेश नहीं मिला।

उसके बाद हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय जाने के लिए रवाना हुए।

### 3. जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

2:40 बजे हम जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय पहुंचे। वहां के एक प्राध्यापक ने हमें विश्वविद्यालय दिखाया उस दिन वहां छात्र चुनाव था। वहा का वातावरण बहुत भयानक था। इतनी भीड़ लोकसभा के चुनाव में भी नहीं होती होगी। विद्यार्थी ढोल बजा रहे थे, नारे दे रहे थे, जोर-जोर से चिल्ला रहे थे यहां के चुनाव के बारे में पहले ही बहुत कुछ भयानक सुना था इसलिए वहां ज्यादा देर रुकने की हिम्मत नहीं थी और ना ही समय था। विश्वविद्यालय के कैंटीन से हमने खाना खाया और और वहां का केंद्रीय पुस्तकालय देखा। पुस्तकालय बहुत बड़ा था। वहा के दो छात्रों ने हमें पुरा पुस्तकालय दिखाया।

### जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय का इतिहास

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.), नई दिल्ली की स्थापना 'जेएनयू अधिनियम 1966' के अन्तर्गत भारतीय संसद द्वारा 22 दिसंबर, 1966 में की गई थी। पंडित जवाहरलाल नेहरू को और अधिक सम्मान देने की दृष्टि से विश्वविद्यालय का औपचारिक उद्घाटन भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति वाराहगिरि वेंकट गिरि द्वारा उनके जन्म दिवस के अवसर पर 14 नवम्बर, 1969 को किया गया था। संयोगवश यह वर्ष महात्मा गाँधी का 'जन्मशती वर्ष' भी था।

वर्ष 1969 में 'जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय' की स्थापना देश की सामाजिक जरूरतों को समझने और समाज के हर तबके को श्रेष्ठ अकादमिक शिक्षा मुहैया कराने के मकसद से की गई थी। इस संस्थान को माकपा महासचिव प्रकाश करात, माकपा पोलित ब्यूरो के सदस्य सीताराम यूचुरी, अमेरिका में स्थित 'मैसाच्यूसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी' में फोर्ड फाउण्डेशन के प्रोफ़ेसर अभिजित बनर्जी और दिल्ली में स्थित 'विदेशी सेवा संस्थान' के डीन ललित मानसिंह सरीखे और देश के कुछ प्रमुख राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, शिक्षाविदों, पत्रकारों और वैज्ञानिकों को उत्पन्न करने का श्रेय हासिल है।

5:00 तक हम वहां से अगले स्थान कुतुब मीनार देखने के लिए पहुंचे।

## 4. कुतुब मिनार

हम सब उस शानदार इमारत को देखने के लिए उत्सुक थे। जब हम वहां पहुंचते हैं, तो उस ऊँचाईवाली इमारत के सामरिक अद्भुतता को देखकर हमारे होश उड़ गए ।शाम के समय कुतुबमीनार देखकर बहुत ही अद्भुत और रोमांचक लगा। सूरज धीरे-धीरे डूब रहा था है ,आसमान रंग- बिरंगी हो रहा था, और उस प्राचीन इमारत की सुंदरता और ऊंचाई और भी प्रखर हो रही थी । ऐसा लग रहा था जैसे की उसके ऊँचाईवाले मिनारें आसमान को छूने की कोशिश कर रही हो और उसका नजारा देखकर मन को शांति और प्रसन्नता मिल रही थी। शाम के आकर्षक प्रकाश और उसकी प्राचीनता का मिलन, वाकई एक खास अनुभव था। अंधेरा होने के कारण प्रकाश जलाने से उसकी सुंदरता और भी बढ़ गई थी। उसकी भव्यता और रौशनी शाम के समय और भी अधिक चमक रही थी। वहां इस पास टूटी हुई दीवारें और एक छोट मस्जिद था। वहा घूमते हुए, हमनें दीवारों पर लिखा इतिहास पढ़ा और आस-पास के सुंदर वातावरण का भी आनंद लिया। वाकई, वह जगह दिल को छू लेने वाली थी और वहां का माहौल अद्भुत था।

## कुतुब मीनार का इतिहास

दिल्ली की कुतुब मीनार एक पाँच मंजिला इमारत है जिसका निर्माण कई शासकों द्वारा चार शताब्दियों में किया गया था। इसे मूल रूप से कुतुब-उद-दीन ऐबक ने, जो दिल्ली सल्तनत का संस्थापक था, 1192 के आसपास एक विजय मीनार के रूप में बनवाया था। मीनार का नाम उन्हीं के नाम पर रखा गया है; हालाँकि वह इसे पहली कहानी से आगे बढ़ाने में सक्षम नहीं था। उनके उत्तराधिकारी शम्स-उद-दीन इल्तुतमिश ने 1220 में संरचना में तीन और मंजिलें जोड़ीं । इसकी सबसे ऊपरी मंजिल को 1369 में बिजली गिरने से क्षति पहुंची थी। इसका पुनर्निर्माण फ़िरोज़ शाह तुगलक ने किया था, जिन्होंने टॉवर में पाँचवीं और अंतिम मंजिल जोड़ी थी, जबकि कुतुब मीनार का प्रवेश द्वार शेर शाह सूरी द्वारा बनाया गया था ।

लगभग 300 साल बाद, 1803 में, एक भूकंप में टावर को फिर से गंभीर क्षति हुई। ब्रिटिश भारतीय सेना के एक सदस्य, मेजर रॉबर्ट स्मिथ ने 1828 में संरचना की मरम्मत की। वह आगे बढ़े और पांचवीं मंजिल के ऊपर बैठने के लिए एक स्तंभयुक्त गुंबद स्थापित किया, इस प्रकार टावर को छठी मंजिल मिल गई। लेकिन इस अतिरिक्त कहानी को 1848 में भारत के तत्कालीन गवर्नर-जनरल हेनरी हार्डिंग के आदेश के तहत हटा दिया गया और मीनार के बगल में पुनः स्थापित किया गया। 1981 में एक दुर्घटना के बाद से टावर में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया है, जिसमें इसके अंदर मौजूद 47 लोगों की मौत हो गई थी।

कुतुब मीनार देखने के बाद हम सीधे होटल चले गए। दूसरे स्थान पर हवा पानी बदलाव आने के कारणके कारण मुझे हल्का बुखार आया था इसलिए मैं नहा धोकर खाना खाकर तुरंत सो गई।

संतुलन कौशल दिखाती हुई लड़की

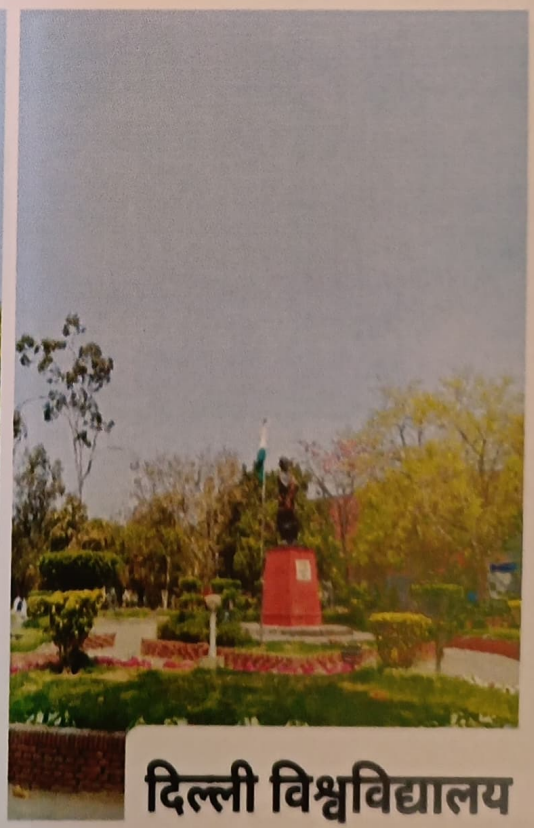

दिल्ली विश्वविद्यालय

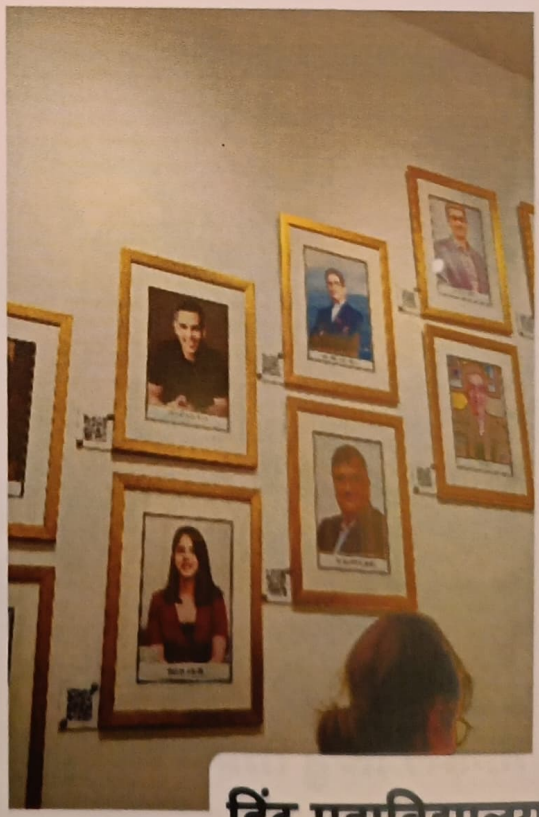

हिंद महाविद्यालय

गुलाब बेचता हुआ लड़का

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

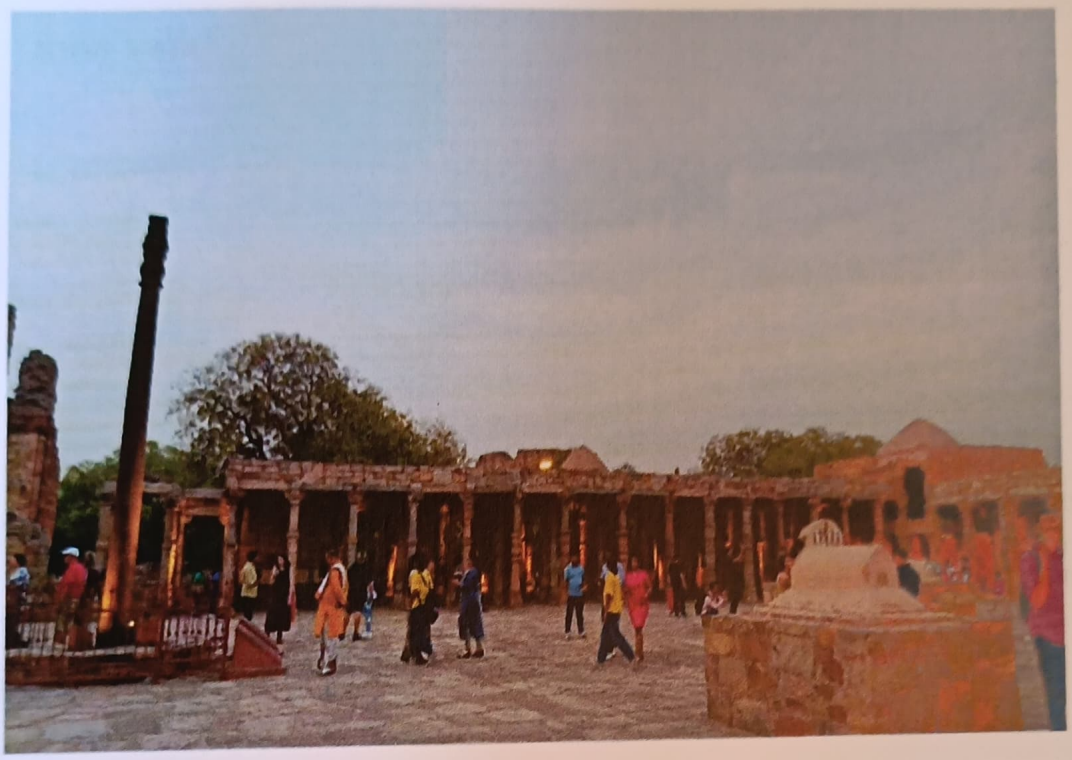

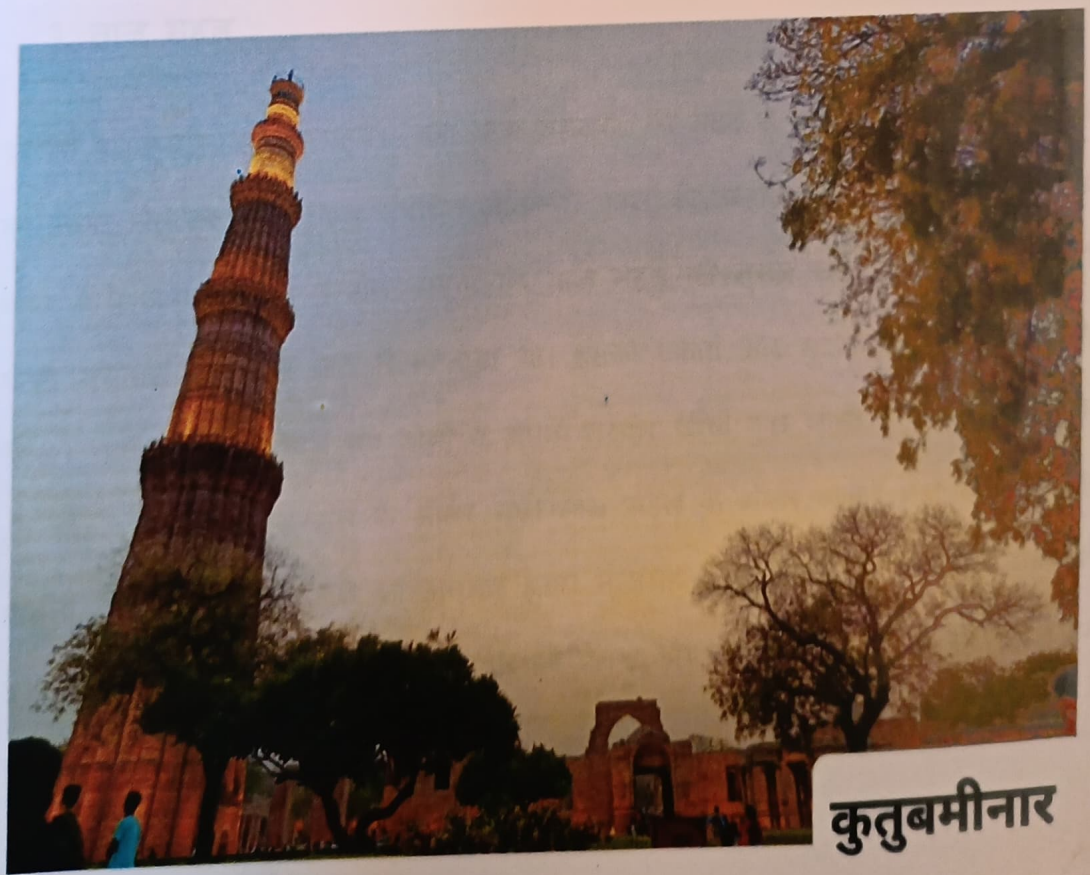

कुतुबमीनार

# दिल्ली में चौथा दीन (23/03/2024)

**भ्रमण स्थान**

1. ताजमहल
2. मथुरा
3. वृंदावन

तीसरे दिन हम सुबह 4:30 बजे होटल की बस से आगरा ताज महल जाने के लिए रवाना हुए 7:30 बजे यमुना एक्सप्रेसवे के पास शिवा ढाबा में हमने नाश्ता किया और वापस बस की यात्रा शुरू हुई।

## 1. ताज महल

11:30 बजे हम ताजमहल पहुंचे। वहां यात्रा संगठक की मदद से हमने ताजमहल की सुंदरता का आनंद लेते हुए ताज महल संबंधित जानकारी प्राप्त की उन्होंने हमें ताज महल के बारे में बहुत सारी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ताज महल को मुग़ल सम्राट शाहजहाँ ने अपनी पत्नी मुमताज़ महल की याद में बनवाया था। इसकी एकता और सुंदरता ने हमें वाकई मोह लिया। प्रवेश द्वार के पास सब लोगों ने अपनी तस्वीर खींची कुछ लोगों ने कैमरा पर तस्वीर ली और फ़िर हम ताजमहल के भीतर गए। ताज महल के भीतर जाकर वहा के शांत और प्राचीन वातावरण में खो जाने का अनुभव हुआ। ताजमहल की आंतरिक दीवारों पर नक्काशी और मोज़ाइक का काम देखा । सफेद मार्बल की चमक और उसके आस-पास की सुंदरता ने हमें बहुत प्रभावित किया।

## ताज महल का इतिहास

ताजमहल का निर्माण सन् 1632 से 1653 तक चला और इसे उस समय के अद्वितीय मुग़ल वास्तुकला का उदाहरण माना जाता है. यह लाल किले के समीप यमुना नदी के किनारे स्थित है. ताजमहल का निर्माण उस समय शाहजहां द्वारा शुरू किया गया था, जब उनकी पत्नी मुमताज़ महल ने अपनी मृत्यु के पश्चात उनसे एक वादा किया था कि उसकी याद में दुनिया का सबसे सुंदर मकबरा बनाया जाए. ताजमहल के निर्माण में लाल पत्थर, सफेद मार्बल, पीतल, सोना, नीलम, मोती, मकरानी पत्थर और अन्य रत्नों का उपयोग किया गया है.

ताजमहल की सुंदरता उसके विस्तृत मकबरा के साथ ही उसकी वास्तुकला, विशालता और सुंदर नक्काशी में छिपी है. यह उच्च कला की एक अद्वितीय उपलब्धि है और संस्कृति, ऐतिहासिकता और प्रेम का प्रतीक माना जाता है इसकी आकृति, आदर्श तरीके से प्रतिबिंबित विन्यास और ज्योतिर्मय चतुर्भुज संरचना इसे एक महान आर्किटेक्चरल श्रृंगार के रूप में प्रमुख बनाती है।

ताज महल के आस-पास के बाग़बानी और यमुना नदी का नजारा भी अद्भुत था। कड़ी दोपहर को 2 घंटे तक ताजमहल घूमने के कारण सभी बहुत थक गए थे तो हमने वहां नजदीक एक होटल में खाना खाया। पेठा मिठाई आगरा की खासियत है तो हमने घर वालों के लिए कुछ पेठा खरीदा और दूसरे स्थान पर जाने के लिए निकल गए। अगला स्थान था मथुरा और वृंदावन जहां जाने की इच्छा मेरे मन में बचपन से थी आज मेरी वह इच्छा पूरी होने जा रही थी।

## 2. मथुरा

जितनी गति से बस जा रही थी उतनी ही गति से मेरी उत्सुकता भी बढ़ रही थी। आखिरकार इंतजार समाप्त हुआ और हम 8:00 मथुरा पहुंच गए समान और फोन अंदर ले जाने की अनुमति

नहीं थी इसलिए हमने अपना सारा सामान बाहर जमा कर दिया और अंदर चले गए । मैं इतनी उत्सुक थी कि अपने दोस्तों को पीछे छोड़कर बिना आसपास देख श्वेता मैडम के साथ सीधे मंदिर में चली गई मंदिर में इतनी भीड़ थी कि हिलने की भी जगह न थी। मंदिर के भीतर जाकर देखा कि कान्हा जी की मूर्ति के आगे परदा लगाया गया था और उन्हें पर्दे से ढक दिया गया था। हर 5 मिनट में पर्दे से श्री कृष्ण जी को ढक दिया जाता है इसके पीछे कारण यह है कि भक्त श्री कृष्ण को देखकर उनसे मोहित हो जाते हैं और भावुक होकर वहीं बैठकर उन्हें निहारत रहते हैं जिस मंदिर में भीड़ बनी रहती है और दूसरे लोगों को दर्शन लेने में दिक्कत होती। कुछ देर बाद पर्दा हटा दिया गया और हमने श्री कृष्णा जी के दर्शन लिए उन्हें देखकर खुशी से मेरी आंखें भर आई सचमुच उन्होंने मुझे मोहित कर लिया था। मन कर रहा था बस वही बैठकर उन्हें निहारती राहू लेकिन समय की पाबंदी के कारण हम अधिक समय तक वहां ठहर नहीं पाए। मेरी बचपन की इच्छा तो पूरी हो गई थी लेकिन मेरा मन नहीं भरा था। वापस जाते समय ऐसा लग रहा था जैसे कि श्री कृष्णा मुझे पीछे से खींच रहे हैं, मैं मुड़ मुड़ कर पीछे देख रही थी। मंदिर के बाहर हमने कुछ खरीदारी की और अगले स्थान जाने के लिए निकल गए। अगला स्थान था वृंदावन।

### 3. वृंदावन

हम रात 10:00 बजे वृंदावन पहुंचे। वहां के रास्ते बहुत छोटे थे इसलिए हम रिक्शा से मंदिर तक चले गए। बीच रास्ते में हमें एक पंडित जी मिले जो हमें सीधे मंदिर में लेकर चले गए उन्होंने हमें श्री कृष्ण के जीवन के बारे में थोड़ी बहुत जानकारी दी और मंदिर में हमारा प्रवेश कराया। यहां पर भी श्री कृष्ण जी को परदे से ढका गया था। हम सब मंदिर में बैठ गए और परदे के खुलने का इंतजार करने लगे मंदिर के पंडित जी हमें दान पुन्य के बारे में बताया । उन्होंने बताया कि यहां पर दान करने से आपके सब कष्ट दूर हो जाते हैं, जिन लोगों ने दान किया था उनकी और उनके परिवारवालो के नाम वहां की दीवारों पर लिख दिए गए थे। उन्होंने

बताया कि बहुत लोग यहां दान करते हैं और दान के पैसों से विधवा वृद्धाओं की मदद होती है। मुझे उनकी बातें सुनकर उन पर शक हुआ क्योंकि हम दर्शन लेने के लिए कितनी देर से बैठे थे लेकिन वह पर्दा खोलने के बजाए कब से केवल दान की ही भूमिका बांधकर सबको दान करने के लिए प्रभावित कर रहे थे। और तब ज्यादा शक हुआ जब मेरे दोस्त के ₹100 देने पर उन्होंने कहा कि दान ₹500 से अधिक ही चाहिए 500 से नीचे दान नहीं दे सकते। मरे मन में बहुत सारे सवाल उठ रहे थे। कोई भी भक्त अपने पूरे दिल से दान करता है चाहे वह 10 हो ₹100 हो या ₹500 हो और पंडित होकर यह ऐसा कैसे कह सकते हैं। यह सवाल मेरी ही मन में नहीं बल्कि बहुत से लोगों के मन में आया और इसी कारण कुछ लोगों ने दान नहीं दिया। दान लेकर उन्होंने श्री कृष्णा पर से पर्दा हटाया। सब ने श्री कृष्ण जी के दर्शन लिए और एक दूसरे को रंग लगाकर मंदिर में वृंदावन की होली मनाई।

वृंदावन में ही रात की 11:00 बज गए थे लंबी दिनचर्या के बाद हम होटल जा रहे थे। दिल्ली के सड़कों की रोशनी और रात की ठंडी हवा थके शरीर और मन को सुकून दे रही थी । थकान के कारण सभी बस में सो गए थे लेकिन मेरे मन में बहुत कुछ चल रहा था। मथुरा में श्री कृष्ण जी को देखकर मन में जिस प्रकार की भावना आई थी उस प्रकार की भावना यहां नहीं आई। यहां महसूस हुआ की मंदिर में श्री कृष्णा नहीं है केवल श्री कृष्ण जी की मूर्ति है और भक्तों का गलत फायदा उठाया जा रहा है। पंडित जी का व्यवहार देखकर मुझे कोकणी साहित्यकार मनोहर राय सरदेसाई जी की कविता की पंक्ति याद आ रही थी (देवाक मेळपाक गेल्लो, भटान आडायलो) अर्थात भगवान से मिलने गया था पंडित जी ने रोक दिया। उनकी कविता को याद करते हुए कब आंख लग गई पता है ना चला दिव्या ने जगाया तो देखा कि हम होटल पहुंच गए हैं। सुबह के 4:00 गए थे दूसरे दिन सुबह 8:00 निकालना था तो सोने का समय नहीं था। नहा धोकर खाना खाते हुए हम गप्पे लडाने लगे। 3 घंटे बीतने में देर नहीं लगी।

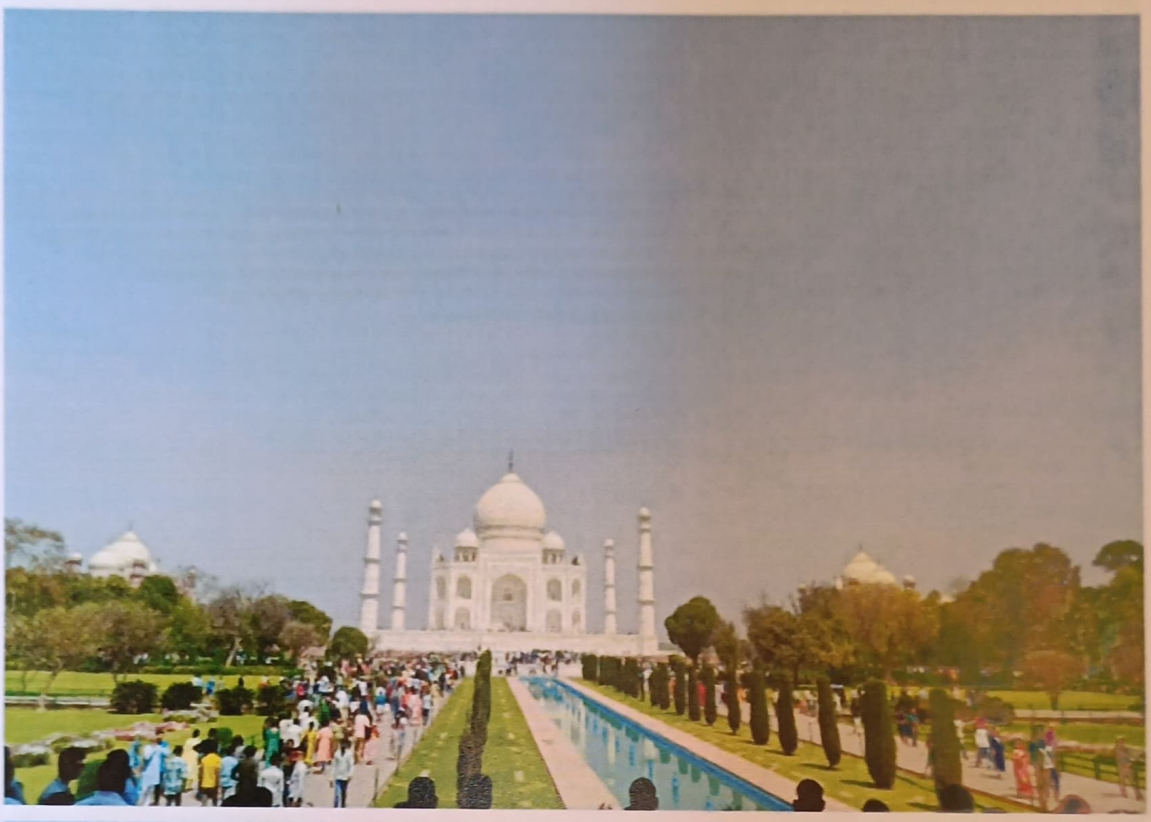

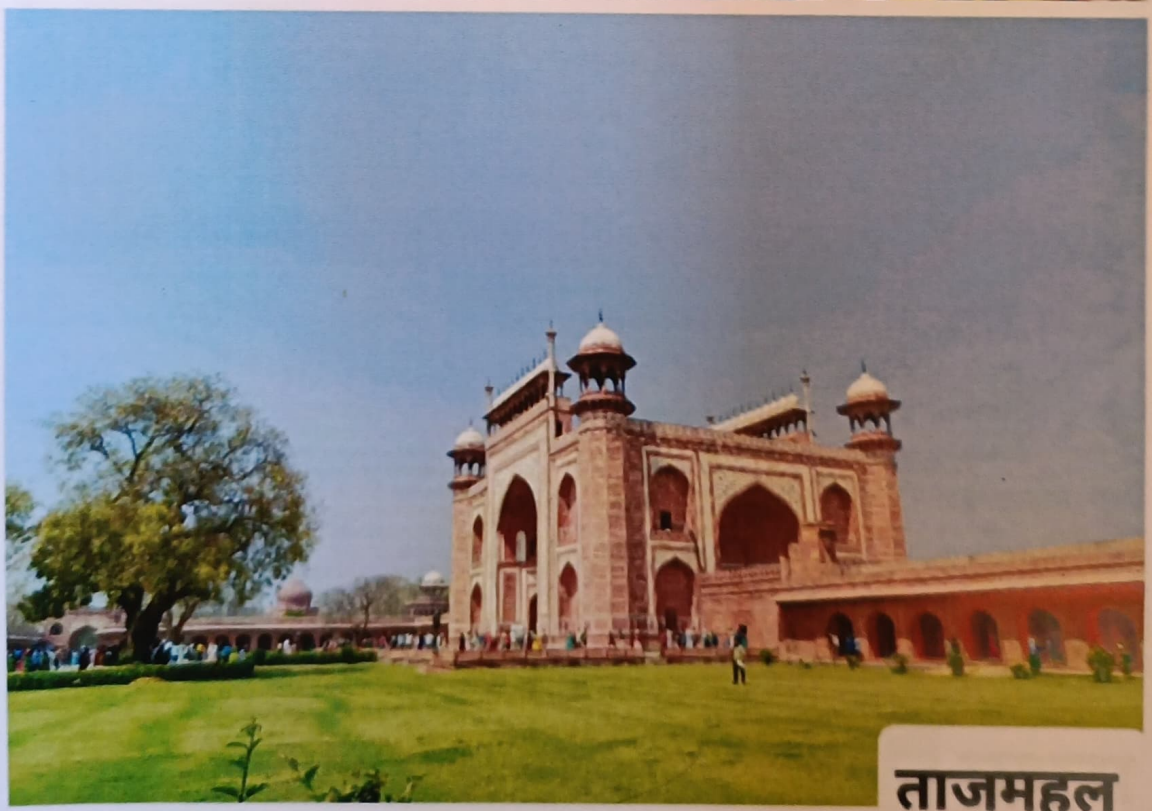

ताजमहल

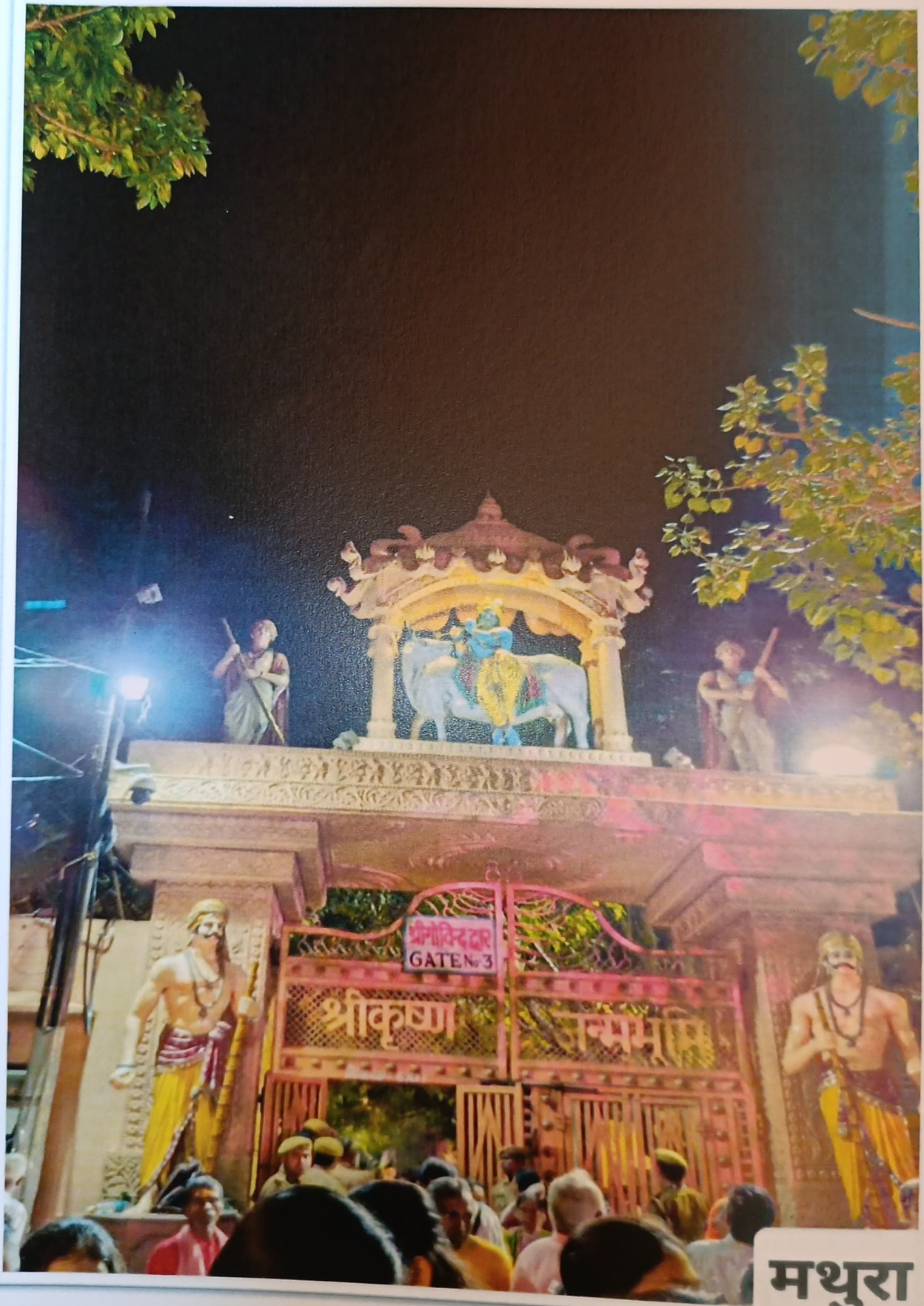


मथुरा

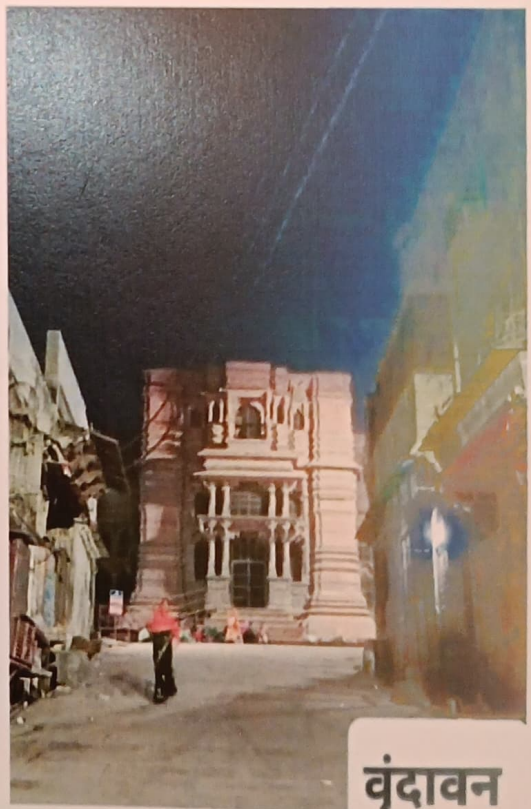

वृंदावन

# दिल्ली में पांचवां दिन (24/03/2024)

भ्रमण स्थान

1. उग्रसेन की बावली
2. राज घाट
3. जामा मस्जिद
4. लाल किला
5. सरोजिनी

अगले दिन सुबह तैयार होकर 8:30 हम बाहर निकले पहला स्थान था ऊग्रसेन की बावली। हम 10:00 बजे वहां पहुंचे

## 1. उग्रसेन की बावली

उग्रसेन की बावली दिल्ली के मध्य में समय द्वारा छोड़ी गई एक स्मृति चिन्ह के रूप में खड़ी है। यह बावली एक कुआं है जिसके तीनों और दीवारें हैं और एक और सीढ़ियां है जहां से उतरकर कुवै की तरफ जा सकते हैं। यह अलंकृत बावड़ी, जो कभी जलाशय हुआ करती थी, शानदार वास्तुकला और प्राचीन इंजीनियरिंग कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सबसे पुराने स्मारकों में से एक और दिल्ली में सबसे अच्छी तरह से संरक्षित बावड़ी, अब यह राष्ट्रीय राजधानी में आने वाले पर्यटकों और फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है। यहां से हम दिल्ली का बाल भवन देखते हुए 11:30 राजघाट पहुंचे।

## 2. राज घाट

राज घाट एक बहुत ही प्रसिद्ध स्मारक है जो। यहां पर महात्मा गांधी की समाधि स्थल है और यह उनके अद्वितीय और अमर योगदान को समर्पित किया गया है। यहां हमें शांत और आध्यात्मिक वातावरण का अनुभव हुआ। इसके आसपास की सुंदरता और हरियाली ने भी दिल को आनंदित कर दिया। फीर हमनें राज घाट का महात्मा गांधी म्यूज़ियम देखा म्यूजियम के एक सर ने हमें पूरा म्यूजियम दिखाते हुए गांधी जी के जीवन के बारे में बहुत कुछ जानकारी दी। वहा हमें महात्मा गांधी के जीवन, कार्य और उनकी महत्वपूर्ण यात्राओं के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ। इस म्यूज़ियम में हमें उनके व्यक्तिगत वस्त्र, शस्त्र, पत्र, और फ़ोटो संग्रह देखने का भी मौका मिला। इसके अलावा, उनके जीवन के महत्वपूर्ण संगठनों, आंदोलनों और सत्याग्रह के बारे में भी जानकारी प्राप्त करने का मौका मिला। यहां हमे एक गहरा और प्रभावशाली अनुभव मिला!

### राज घाट का इतिहास

राजघाट महात्मा गांधी की स्मृति है। यह यमुना नदी से ज्यादा दूर नहीं पाया गया है और शुरू में यह एक उल्लेखनीय घाट का नाम था। कालान्तर में समर्पण क्षेत्र को राजघाट भी कहा जाता था। यहीं पर महात्मा गांधी के निधन के कई दिन बाद 31 जनवरी, 1948 को उनका अंतिम संस्कार किया गया था।

महात्मा गांधी का यह स्मारक रिंग रोड और यमुना नदी के तट के बीच, लाल किले के दक्षिण-पूर्व की ओर और जनपथ से चार किलोमीटर दूर, फ़िरोज़ शाह के ऊपरी पूर्व की ओर स्थित है। एक गहरे संगमरमर का मंच महात्मा गांधी के समाधि स्थल को दर्शाता है, जो बड़ी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करता है। उनके अंतिम शब्द, 'हैलो राम', संगमरमर पर दर्ज हैं जो लगातार फूलों से सजाया जाता है। इस स्मृति की संरचना वनु जी. भूता द्वारा की गई थी, जिन्होंने इसे

महात्मा के जीवन की सहजता को प्रतिबिंबित करने के लिए योजना बनाई थी। यह एक अंतहीन आग के साथ प्रकट होता है जो लगातार एक तरफ भस्म करती है।

राज घाट के शांत वातावरण का आनंद लेकर  हम जमा मस्जिद चले गए जो आज का तीसरा स्थान था।

### 3. जामा मस्जिद

हम 2:00 बजे वहां पहुंचे। हम सीढ़ियों से उपर गए। मस्जिद के ऊपर चढ़ते ही मनमोहक दृश्य मिला। वहां से दिल्ली का  खूबसूरत नजरा दिखाई दे रहा था। जब हमनें मस्जिद में प्रवेश किया तो हमें उसकी शान और सुंदरता का एहसास हुआ। यह मस्जिद भारत का सबसे बड़ा मस्जिद हैं। लोग नमाज़ पढ़ने के लिए अंदर जा रहें थे। मस्जिद के पास एक छोटा सा तालाब है जहां नमाज पढ़ने से पहले हाथ मुंह और पैर धोते हैं। मेरी दोस्त सोफीया ने हमें मस्जिद की और मस्जिद से जुड़े तथ्यों की जानकारी दी। मस्जिद के बाहर सीडियो पर किसी को बैठने की अनुमति नहीं थी  कोई आकर बैठ नहीं इसलिए एक बच्चा वहां पानी छिड़क रहा था।

### जामा मस्जिद का इतिहास

दिल्ली की जामा मस्जिद मुगल स्थापत्य का बेहतरीन उदाहरण है. लाल किले से 500 मीटर की दूरी पर मौजूद ये मस्जिद अपनी भव्यता और खूबसूरती के लिए दुनियाभर में मशहूर है. इस मस्जिद को मुगल सम्राट शाहजहां ने बनवाया था। दिल्ली की जामा मस्जिद को बनने में 12 साल लग गए थे. इसका निर्माण 1644 ई में शुरू हुआ था और यह 1656 ई में बनकर तैयार हुआ।

जामा मस्जिद के बाद  2:30  बजे हम लाल किला पहुंच गए जो हमारा चौथा स्थान था।

## 4. लाल किला

लाल किला पर  बहुत भिड़ थी हम एक दूसरे का हाथ पकड़कर चल रहे थे। लाल किला का लाल रंग और उसकी ऊंची ईमारत बहुत प्रभावशाली लग रही थी। भीड़ और थकान के कारण हम अंदर नहीं गए बस बहार खड़े होकर किला देखा और बस बाहर ही कुछ तस्वीरें ली।

### लाल किला का इतिहास

लाल किला का निर्माण 17वीं शताब्दी के मध्य में मुगल बादशाह शाहजहां ने करवाया था। लाल किला का असली नाम किला-ए-मुबारक है। किले को सम्राट की शक्ति और भव्यता के प्रतीक के रूप में बनाया गया था और लगभग 200 वर्षों तक मुगल राजधानी के रूप में कार्य किया। शाहजहां ने अपनी राजधानी आगरा की जगह दिल्ली शिफ्ट करने के लिए 29 अप्रैल 1638 में लाल किले का निर्माण शुरू करवाया, जो 1648 में पूरा हुआ। लाल किला को बनने में 10 साल का समय लगा। लाल किला ने 1857 तक मुगल साम्राज्य की राजधानी रूप में कार्य किया। इसके बाद, अंग्रेजों ने इस पर कब्जा कर लिया। ब्रिटिश शासकों ने लाल किले का काफी उपयोग किया था। 1857 की क्रांति के बाद, ब्रिटिश शासन के दौरान लाल किला ब्रिटिश सत्ता का प्रतीक बन गया था। वे इसे अपने सिंहासन के रूप में इस्तेमाल करते थे और अपनी सेना के साथ यहां कैंप लगाते थे। 1947 में भारत की आजादी के बाद, लाल किला भारत सरकार के अधिकार में आया। लाल किला देखने के बाद हम अगले स्थान की ओर रवाना हुए।

## 5. सरोजिनी बाजार

अगला स्थान था सरोजनी  बाजार जहां जाने के लिए सभी उत्सुक थे। लेकिन राज घाट की भिड़ देखकर सरोजनी बाजार जाना पक्का नहीं था। जब सर ने कहा कि अगला साथ सरोजनी बाजार नहीं सीधे होटल हैं तो सबके चेहरे मुर्जा गए। लेकिन फिर सर ने कहा कि हां सरोजनी जा रहें हैं तो फ़िर सबके चहरे पर वहीं उत्सुकता छा गई। जब हम सारोजनी बाजार पहुंचे तब

बिन मौसम बरसात होने लगी। बारिश हल्की थी इसलिए हम थोड़ी देर वहीं रूककर बारिश के रुकते ही अंदर चले गए। सरोजनी बाजार में इतनी भीड़ थी कि वहां घूमने में ही डर लग रहा था सबको अलग-अलग खरीदारी करनी थी और भिड़ के कारण भी सबका साथ रहना संभव नहीं था तो हम चार-पांच लोग एक साथ हाथ पकड़ कर घूम रहे थे। हमने अपने लिए और घर वालों के लिए काफी कुछ खरीदा और 8:00 बजे वहां से होटल लौट गए। नाहा धोकर खाना खाया। दूसरे दिन सुबह 5:00 हमारी गोवा वापसी थी तो हमने अपना सारा सामान बांध दिया और जल्दी सो गए।

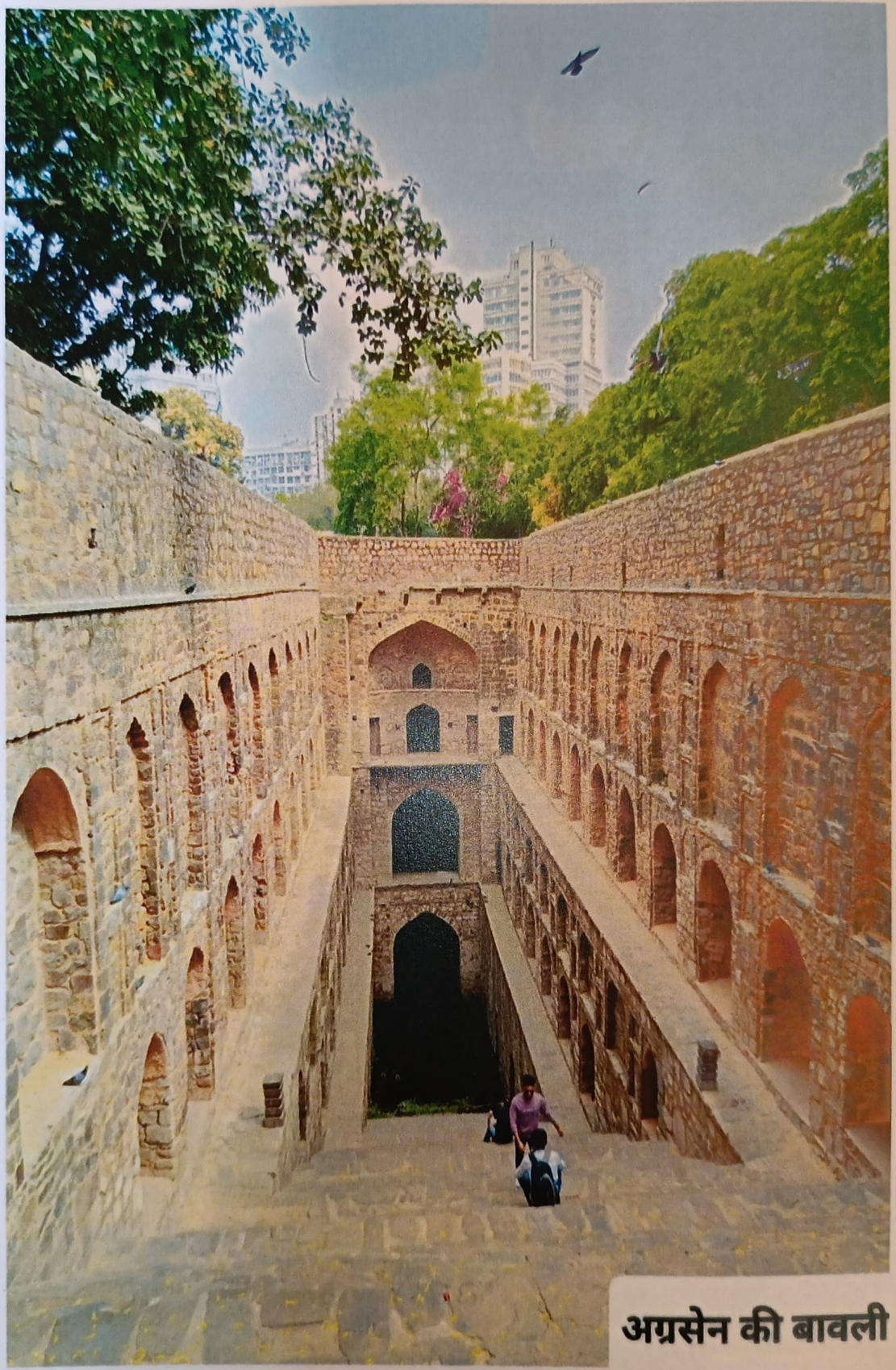

अग्रसेन की बावली

राज घाट

गांधी मेमोरियल म्यूजियम

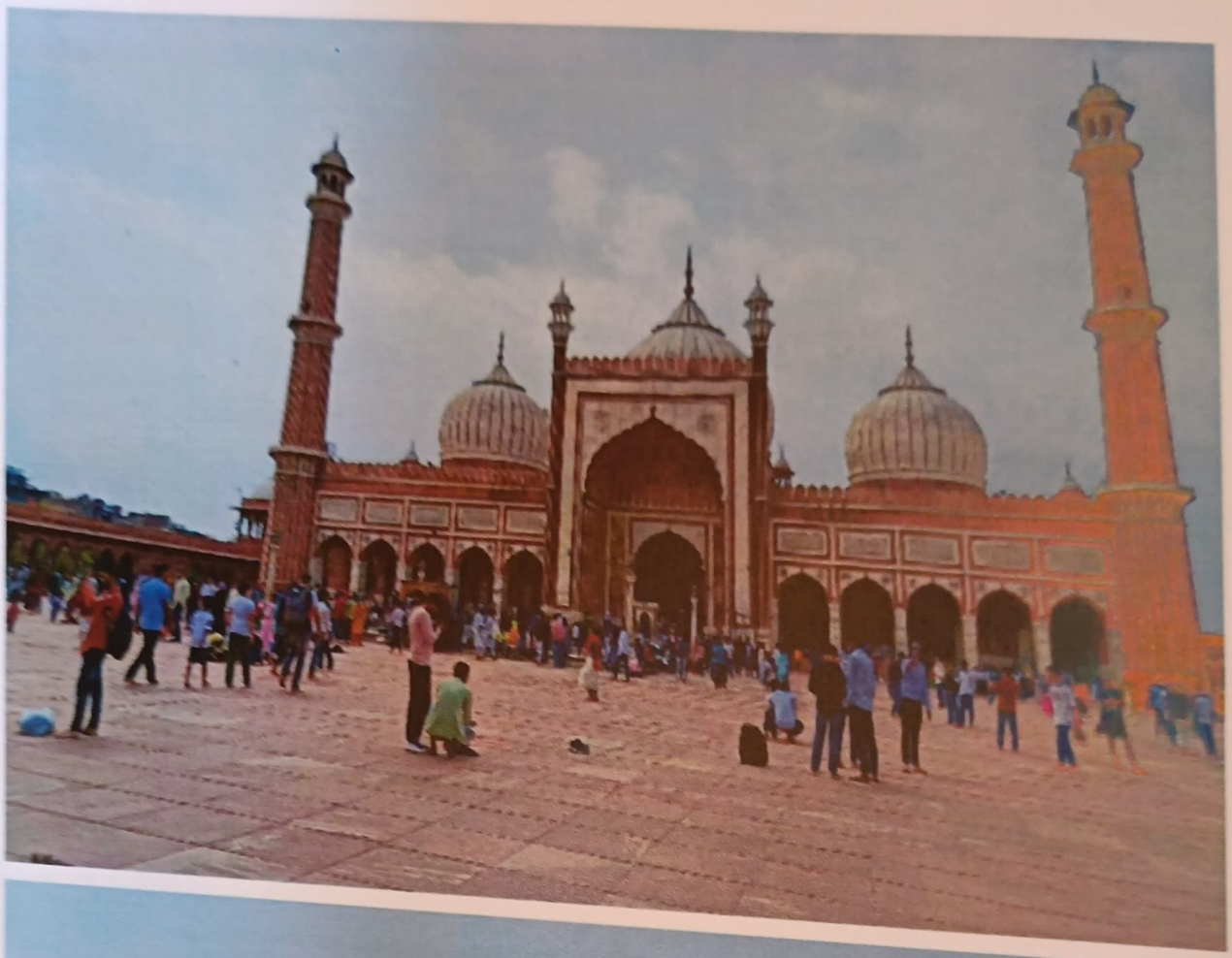

जामा मस्जिद

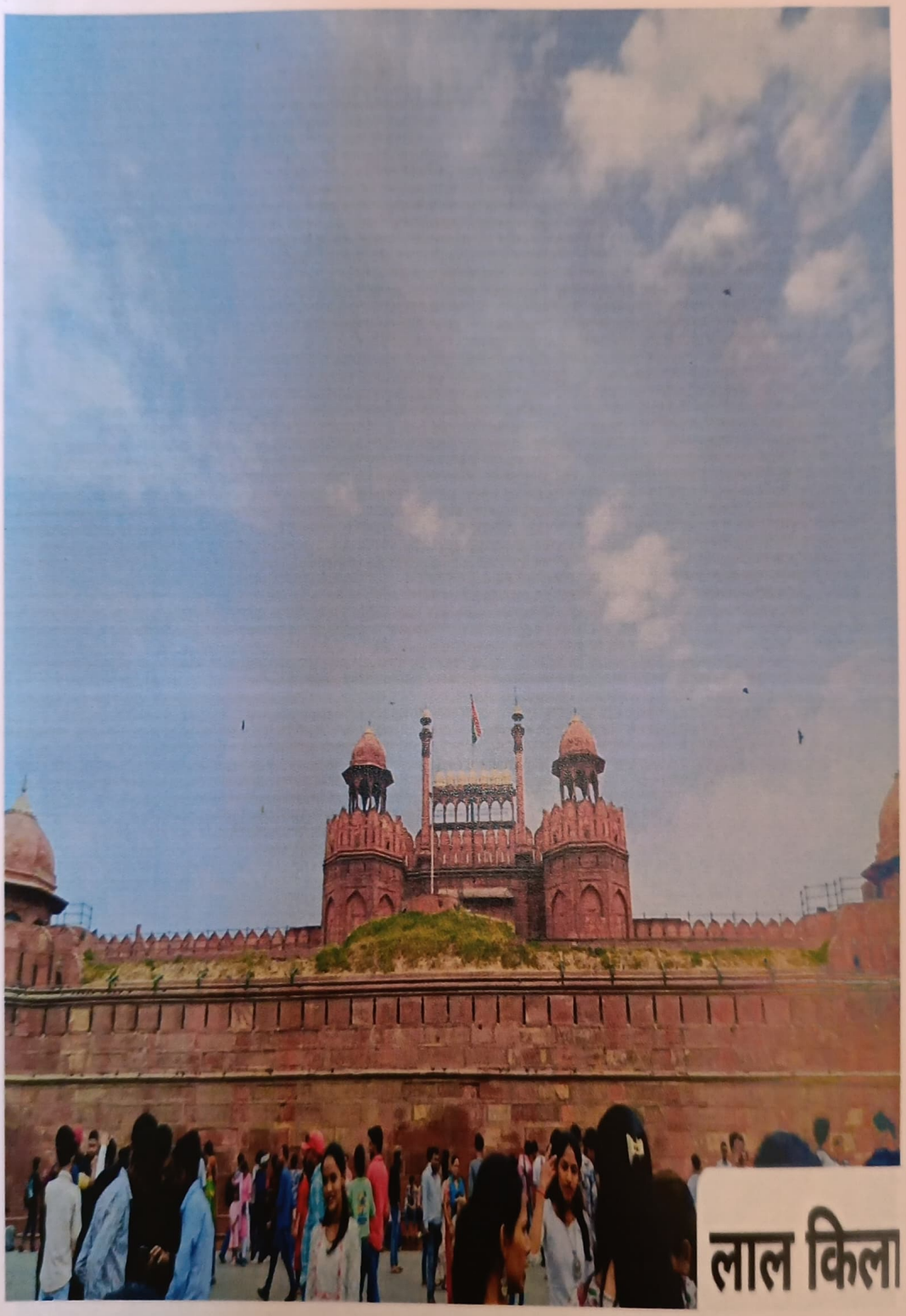

लाल किला

सरोजिनी बाजार

## वापसी

25 तारीख को सुबह 5:30 बजे ' हज़रत निज़ामुद्दीन - तिरुवनंतपुरम सेंट्रल एसएफ एक्सप्रेस' इस ट्रेन से हमारी गोवा वापसी थी। हम सुबह 4:30 बजे होटल की बस से दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुंचे। सब का सामान बहुत भारी था तो हमें कुली की आवश्यकता थी लेकिन कुली ने सब सामान एक साथ ले जाने से मना कर दिया तो हमें सब सामान घसीटते हुए ले जाना पड़ा। स्टेशन पर हमारे सामान की चेकिंग की और चेकिंग के बाद हम अपना सामान उठाकर ट्रेन में चढ़ गए। जाते वक्त किसी ने धक्का मुक्की नहीं की। सब आराम से ट्रेन में बैठे गए। लेकिन रेल्वे स्टेशन पर सामान की चेकिंग करते वक्त मेरी दोस्त कृतिका अपना एक बैग वहीं भूल गई कीमती सामान होने के कारण वह बहुत रोई। ट्रेन छुटने में कुछ ही समय बाकी था लेकिन, प्रीतेश और साहीश्री ने साहस दिखाकर भागते हुए उसका बैग वापस लेकर आए।

कुछ देर बाद ट्रेन शुरू हुई। इतने दिनों की थकान के कारण। सभी ने पूरा डेढ़ दिन ट्रेन में सोकर बताया। 26 तारीख को दोपहर 12:00 हम गोवा पहुंचे।

## निष्कर्ष

गोवा विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा आयोजित दिल्ली भ्रमण ने मुझे एक अनूठा और यादगार अनुभव दिया। दिल्ली में कोई महत्वपूर्ण जगहों पर घुमने का अवसर प्राप्त हुआ। इंडिया गेट और कुतुब मीनार की भव्यता, ललित कला अकादमी की कलाएं, हिंदू कॉलेज और दिल्ली विश्वविद्यालय का जीवंत वातावरण और ताजमहल और मथुरा-वृंदावन का प्रेम भरा माहौल, राज घाट और कमल मंदिर का शांति पूर्ण वातावरण इन सबने मुझ पर अमिट छाप छोड़ी मुझ पर। इस यात्रा ने मुझे जीवन में नए दृष्टिकोण दिए हैं और भारतीय संस्कृति और इतिहास के बारे में अधिक जानने का अवसर दिया है। यह वास्तव में एक उल्लेखनीय और प्रभावशाली यात्रा थी जो हमेशा याद रहेगी। दिल्ली की भ्रमण यात्रा ने मुझे  सीखने के साथ-साथ बहुत सारी यादें बनाने का मौका दिया। स्ट्रीट फूड , बाजार में शॉपिंग, और दोस्तों के साथ घूमना - सभी पल यादगार हैं। श्वेता मैडम और दीपक सर ने हमें हर जगह ले जाकर उनके महत्व और इतिहास के बारे में समझाया। दिपक सर ने हमें स्मारकों के पीछे की कहानियाँ बताईं और हमें उनकी वास्तुकला और डिजाइन के बारे में भी समझाया।  उनके साथ हमें आत्मविश्वास से भरपूर बनने में भी मदद की, और हमने अपने अवलोकन और प्रश्न साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया। शिक्षकों ने हमें एक सुरक्षित और आनंददायक अध्ययन दौरा अनुभव दिया, जिसके लिए हम उनका हमेशा आभार रखेंगे!